नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

# नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 016
दि. 16.10.2025,
गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com


# असम के बक्सा में ज़ुबिन गर्ग केस पर भड़की हिंसा: पुलिस-पब्लिक में खूनी भिड़ंत, कई घायल

बक्सा। असम के बक्सा जिले में बुधवार को ज़ुबिन गर्ग की हत्या मामले में गिरफ्तार पांच आरोपियों को अदालत में पेश करने के दौरान भारी तनाव और हिंसा भड़क गई। पुलिस के मुताबिक, जेल से आरोपियों को ले जाते समय सैकड़ों लोग सड़क पर जमा हो गए और पुलिस काफिले पर पथराव शुरू कर दिया। भीड़ की हिंसा ने स्थानीय प्रशासन और पुलिस को बड़े संकट में डाल दिया।

**भीड़ ने किया पथराव और आगजनी**

स्थानीय सूत्रों के अनुसार, ज़ुबिन गर्ग के समर्थक और गुस्साए लोग आरोपियों को पुलिस के हवाले करने की मांग कर रहे थे। देखते ही देखते पुलिस वाहन और अन्य संपत्तियों पर पथराव शुरू हो गया। भीड़ ने कई वाहनों में आग लगा दी, जिससे स्थिति और भयावह हो गई।

**पुलिस ने अपनाई कड़ी कार्रवाई**

भीड़ को काबू में करने के लिए पुलिस ने हवाई फायरिंग, लाठीचार्ज और आंसू गैस के गोले का इस्तेमाल किया। बावजूद इसके भीड़ तितर-बितर नहीं हो पाई और

इस संघर्ष में कई पुलिसकर्मी घायल हो गए। बताया गया कि तीन पुलिस वाहन पूरी तरह जल गए, जबकि एक पत्रकार भी जख्मी हुआ।

**अदालत में पेशी और न्यायिक हिरासत**

बाद में पुलिस ने आरोपियों को अदालत में सुरक्षित तरीके से पेश किया। अदालत ने सभी पांच आरोपियों को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजने का आदेश दिया। इसके बाद उन्हें कड़ी सुरक्षा के बीच बक्सा ज़िला जेल लौटाया गया।

**हिरासत में लिए गए आरोपी**

न्यायिक हिरासत में भेजे गए आरोपियों में दो मुख्य आरोपी शामिल हैं: नॉर्थ ईस्ट इंडिया फेस्टिवल के आयोजक श्यामकानु महंत और ज़ुबिन के मैनेजर सिद्धार्थ शर्मा, जिन्हें 1 अक्टूबर को गिरफ्तार किया गया था। अन्य आरोपियों में ज़ुबिन का चचेरा भाई और निलंबित पुलिस अधिकारी संदीपन गर्ग, जो उनके साथ सिंगापुर गए थे, और ज़ुबिन के दो निजी सुरक्षा अधिकारी नंदेश्वर बोरा और परेश बैश्य, जिन्हें 10 अक्टूबर को गिरफ्तार किया गया, शामिल हैं।

**सुरक्षा और निषेधाज्ञा**

हिंसा के बाद बक्सा जेल के आसपास और मुशालपुर शहर में निषेधाज्ञा लागू कर दी गई है। आगे किसी भी तरह की अशांति रोकने के लिए आरएएफ और अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किए गए हैं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि इस प्रकार की हिंसा एक तरफ़ तो कानून व्यवस्था के लिए चुनौती है, वहीं दूसरी तरफ जनता में गहरी नाराजगी और न्याय की मांग का संकेत भी देती है। अधिकारियों का कहना है कि आरोपियों की न्यायिक हिरासत के दौरान सुरक्षा व्यवस्था को पूरी तरह सख्त रखा जाएगा ताकि किसी भी अप्रिय घटना से बचा जा सके।

यह घटना ज़ुबिन गर्ग मामले में न्याय प्रक्रिया की संवेदनशीलता और समाज में भावनात्मक प्रतिक्रिया की गंभीरता को दर्शाती है, जिसे शांतिपूर्ण और सुव्यवस्थित तरीके से संभालना स्थानीय प्रशासन के लिए चुनौतीपूर्ण साबित हो रहा है।

## आध्यात्मिकता के बिना नैतिकता का कोई अर्थ नहीं: मोहन भागवत

अहमदाबाद। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के प्रमुख मोहन भागवत ने गुजरात के कोबा स्थित प्रेक्षा विश्व भारती ध्यान केंद्र के दौरे के दौरान कहा कि आध्यात्मिकता के बिना नैतिकता का कोई अर्थ नहीं है।

भागवत ने यह विचार आध्यात्मिक गुरु आचार्य महाश्रमणजी से मुलाकात के बाद साझा किया। उन्होंने बताया कि व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चरित्र का आधार नैतिकता है, और नैतिकता की नींव आध्यात्मिकता पर टिकी होती है।

संघ प्रमुख ने कहा, "यदि लोग 'मैं सबमें हूं और सब मुझमें हैं' के मंत्र को अपनाएं तो समाज में हिंसा समाप्त हो जाएगी।" उन्होंने यह भी बताया कि वे हर साल इस केंद्र में अपनी 'बैटरी चार्ज' करने आते हैं, ताकि व्यक्तिगत और सामाजिक मूल्य मजबूत बने रहें।

मोहन भागवत के अनुसार, आध्यात्मिकता समाज में सहिष्णुता, नैतिकता और सामूहिक भलाई को बनाए रखने का मूल आधार है। उन्होंने जोर दिया कि केवल बाहरी आचार और नियमों से नैतिकता कायम नहीं रह सकती, अगर उसके पीछे आध्यात्मिक चेतना न हो।

## जैसलमेर बस हादसा : जाम दरवाजे ने ली 21 जिंदगियां, आग के बीच तड़पते रहे यात्री

जैसलमेर/जोधपुर। राजस्थान के रेतीले मरुस्थल की शांत रात मंगलवार को चीखों और आग की लपटों से गूंज उठी, जब जैसलमेर में एक एसी स्लीपर बस आग की भयानक चपेट में आ गई। हादसे की भयावहता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि बस का मुख्य दरवाजा जाम हो जाने के कारण यात्री अंदर फंस गए और अधिकांश वहीं जलकर जान गंवा बैठे। बुधवार को जोधपुर के एमजी अस्पताल में भर्ती आठ वर्षीय बच्चे की भी मौत हो गई, जिससे इस दर्दनाक हादसे में मरने वालों की संख्या बढ़कर 21 हो गई। चार गंभीर घायल अब भी वेंटिलेटर पर जिंदगी और मौत के बीच झूल रहे हैं।

पुलिस जांच में सामने आया है कि हादसे के वक्त बस में करीब 40 लोग सवार थे। बस जैसलमेर से जोधपुर की ओर जा रही थी, तभी अचानक इंजन में शॉर्ट सर्किट हुआ और कुछ ही मिनटों में आग ने पूरे वाहन को घेर लिया। जब ड्राइवर और कंडक्टर ने दरवाजा खोलने की कोशिश की, तब तक उसका लॉक सिस्टम जाम हो चुका था। बस के भीतर धुआं भर गया और यात्री घबराहट में खिड़कियों को तोड़ने लगे, मगर जालियों और तंग जगहों के कारण अधिकांश लोग बाहर नहीं निकल पाए। कुछ यात्रियों ने किसी तरह कांच तोड़कर अपनी जान बचाई, लेकिन जो अंदर फंस गए, वे आग की लपटों में झुलस गए।

स्थानीय ग्रामीणों और राहगीरों ने बहादुरी दिखाते हुए आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। अग्निशमन दल और पुलिस मौके पर पहुंची, परंतु बचाव कार्य बेहद कठिन था क्योंकि बस का ढांचा आग से पूरी तरह पिघल चुका था। राहतकर्मियों को शवों को निकालने में कई घंटे लगे। कई शव इतने बुरी तरह जल चुके थे कि उनकी पहचान करना संभव नहीं था। प्रशासन ने मृतकों के परिजनों से डीएनए नमूने लेकर पहचान की प्रक्रिया शुरू की है।

एमजी अस्पताल, जोधपुर के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि अब भी 14 घायलों का इलाज चल रहा है, जिनमें से चार की हालत नाजुक है। अस्पताल परिसर में रोने-बिलखने की आवाजें थम नहीं रहीं। एक पिता अपने बेटे के शव के पास बैठा कह रहा था — "अगर दरवाजा खुल जाता तो मेरा बच्चा आज ज़िंदा होता" यह वाक्य पूरे हादसे की त्रासदी को बयान करता है।

राज्य सरकार ने इस हादसे की मजिस्ट्रियल जांच के आदेश दिए हैं और बस कंपनी के मालिक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। प्राथमिक जांच में सामने आया है कि बस का दरवाजा इलेक्ट्रॉनिक लॉक सिस्टम से नियंत्रित था, जो बिजली की आपूर्ति रुकने पर स्वतः लॉक हो जाता है। यह तकनीकी खामी यात्रियों के लिए मौत का जाल बन गई। मुख्यमंत्री ने हादसे पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए पीड़ित परिवारों को पाँच-पाँच लाख रुपये की सहायता राशि और गंभीर रूप से घायलों को निःशुल्क उपचार का आश्वासन दिया है। उन्होंने कहा कि यदि जांच में लापरवाही साबित होती है, तो बस ऑपरेटरों और परिवहन विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

## वंदे भारत 4.0 जल्द पटरियों पर: रेल मंत्री ने दी जानकारी

नई दिल्ली। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बुधवार को घोषणा की कि वंदे भारत ट्रेन का नया संस्करण 4.0 जल्द ही पटरियों पर दौड़ेगा। उन्होंने कहा कि यह ट्रेन तकनीकी और सुविधाओं की दृष्टि से विश्व की अन्य हाई-स्पीड ट्रेनों के स्तर को पार करेगी। नया वर्जन यात्रियों के लिए तेज़ रफ्तार, कम कंपन और बेहतर आरामदेह अनुभव सुनिश्चित करेगा।

**अंतरराष्ट्रीय रेल प्रदर्शनी में उद्घाटन**

रेल मंत्री ने यह जानकारी दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित 16वीं अंतरराष्ट्रीय रेल उपकरण प्रदर्शनी के उद्घाटन के मौके पर दी। यह प्रदर्शनी एशिया की सबसे बड़ी और विश्व की दूसरी सबसे बड़ी रेल प्रदर्शनी मानी जाती है, जिसमें 15 से अधिक देशों की 400 से ज्यादा कंपनियां अपने उत्पाद और तकनीक प्रदर्शित कर रही हैं।

**वैश्विक कंपनियों की भागीदारी**

प्रदर्शनी में भारत के अलावा ऑस्ट्रेलिया, चीन, फ्रांस, जर्मनी, जापान, रूस, अमेरिका और कई अन्य देशों की कंपनियों ने अपनी नवीनतम तकनीकें और उपकरण प्रदर्शित किए। ये कंपनियां भारत की रेलवे प्रणाली को

आधुनिक बनाने और उसे अंतरराष्ट्रीय मानकों पर लाने में योगदान दे रही हैं।

**तेज पिकअप और उच्च गति**

वैष्णव ने बताया कि वंदे भारत 4.0 को विश्व की बेहतरीन ट्रेनों से बेहतर प्रदर्शन करने के लिए डिजाइन किया गया है। वर्तमान वंदे भारत 3.0 शून्य से 100 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार 52 सेकंड में पकड़ लेती है, जो जापान और यूरोप की ट्रेनों की तुलना में तेज़ है। वर्जन 4.0 में यह क्षमता और बढ़ाई जाएगी। ट्रेन की अधिकतम परिचालन गति 160 किमी प्रति घंटा से अधिक होगी।

**कम कंपन और बेहतर सुविधाएँ**

नई वंदे भारत 4.0 में हल्का डिजाइन और उन्नत मोटर तकनीक अपनाई जाएगी, जिससे उच्च गति कम समय में प्राप्त होगी। बोगियों में ध्वनि-अवरोधक सामग्री और उन्नत उपकरणों का इस्तेमाल किया जाएगा ताकि आवाज और कंपन कम हो और यात्रा अधिक आरामदायक हो।

**अंतरराष्ट्रीय मानकों पर जोर**

- बेहतर सवारी गुणवत्ता: बोगियों के सस्पेंशन सिस्टम को उन्नत कर यात्रियों को झटके और कंपन कम महसूस होंगे।
- उन्नत सीटें और कारीगरी: सीटों को और आरामदायक बनाया जाएगा और कोच के आंतरिक डिज़ाइन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुधारा जाएगा।
- सुधरे हुए शौचालय: बायो-वैक्यूम शौचालयों को और कुशल और उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाया जाएगा।
- डस्ट्री 4.0 टेक्नोलॉजी: वंदे भारत 4.0 कोच निर्माण में रोबोटिक्स और एडवांस ऑटोमेशन का इस्तेमाल किया जाएगा।
- कवच 4.0: नई ट्रेन स्वदेशी स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली कवच 4.0 से लैस होगी, जो रेलवे सुरक्षा को अभूतपूर्व स्तर तक बढ़ाएगी।

रेल मंत्री ने कहा कि वंदे भारत 4.0 न केवल यात्रियों को तेज़ और सुरक्षित यात्रा प्रदान करेगी, बल्कि यह भारत की रेलवे तकनीक को वैश्विक मानकों पर लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

## 'महाभारत' के अमर कर्ण का अंत—पंकज धीर की विदाई ने पूरे फिल्म जगत को रुलाया

मुंबई की शाम कुछ ज्यादा ही भारी हो गई जब खबर आई कि टीवी और सिनेमा जगत के प्रतिष्ठित अभिनेता पंकज धीर अब हमारे बीच नहीं रहे। बी.आर. चोपड़ा की महाभारत में "कर्ण" की भूमिका निभाकर अमर हो चुके इस अभिनेता ने 68 वर्ष की आयु में कैंसर से लंबी जंग हार ली। अपने अद्भुत अभिनय, गहरी आवाज़ और शालीन व्यक्तित्व से दर्शकों के दिलों पर छाप छोड़ने वाले पंकज धीर का यूँ जाना मानो एक युग का अंत हो गया।

मुंबई के श्मशान घाट पर जब उनका पार्थिव शरीर पहुँचा, तो हवा में एक अजीब सी खामोशी थी। उनके बेटे और अभिनेता निकेतन धीर पिता के शव से लिपटकर फूट-फूटकर रो पड़े। उसी क्षण बॉलीवुड के कई सितारे वहाँ पहुँच गए। सलमान खान, जो पंकज धीर के बेहद करीब माने जाते थे, सबसे पहले पहुंचे। उन्होंने निकेतन को गले लगाकर दिलासा दिया, पर उनकी खुद की आँखें नम थीं। सलमान ने धीरे से कहा—"कर्ण जैसा इंसान कोई दूसरा नहीं हो सकता, न पर्दे पर, न ज़िंदगी में।" वहाँ मौजूद हर व्यक्ति के चेहरे पर सिर्फ एक ही भाव था—शोक और सम्मान। अजय देवगन, अक्षय कुमार, रोहित शेट्टी, आशुतोष राणा, और टीवी जगत के दर्जनों कलाकारों ने अंतिम दर्शन किए। कई कलाकारों ने सोशल मीडिया पर उनकी तस्वीरें साझा कीं और लिखा—"उन्होंने हमें सिखाया कि अभिनय सिर्फ कला नहीं, एक साधना है।"

पंकज धीर की बीमारी की खबर कुछ महीनों से ही सामने आई थी, लेकिन उन्होंने कभी इसे चर्चा का विषय नहीं बनने दिया। उन्होंने अपने परिवार से कहा था कि "मुझे दया नहीं, बस यादें देना।" वे अंतिम दिनों में अपने घर पर थे, परिवार और करीबी दोस्तों के बीच। डॉक्टरों के

अनुसार, उनका कैंसर आखिरी चरण में था, लेकिन उन्होंने आखिरी दिन तक किसी से हार नहीं मानी।

उनका जीवन भी किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं था। दिल्ली में जन्मे पंकज धीर ने 1983 में फिल्म सूखा से अपने करियर की शुरुआत की। बाद में उन्होंने कर्म योद्धा, सोल्जर, बाहुबली (1992), तीन देवियाँ, और अनेक धारावाहिकों में यादगार भूमिकाएँ निभाईं। लेकिन 1988 में जब महाभारत प्रसारित हुआ और उन्होंने "कर्ण" का किरदार निभाया, तो उन्होंने भारतीय टेलीविजन इतिहास में अमिट स्थान बना लिया।

कर्ण की करुणा, शौर्य और आत्मसम्मान का जो चित्रण उन्होंने किया, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए अभिनय की पाठशाला बन गया। उनके निधन की ख़बर के साथ ही सोशल मीडिया पर श्रद्धांजलियों की बाढ़ आ गई। दर्शकों ने लिखा—"कर्ण चला गया, पर उसकी आवाज़ अब भी कानों में गूंजती है।" कई पुराने दर्शकों ने याद किया कि कैसे 80 और 90 के दशक में पंकज धीर के संवाद बच्चे-बच्चे को याद रहते थे—"दानवीर कर्ण आज भी ज़िंदा है।"

विडंबना यह रही कि अगले महीने उनका जन्मदिन था, और चार दिन बाद अपनी पत्नी के साथ 49वीं शादी की सालगिरह मनाने वाले थे। परिवार वालों ने बताया कि वे इन मौकों का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे, लेकिन किस्मत को कुछ और मंज़ूर था। इसी बीच, फिल्म जगत को एक और झटका लगा जब दिग्गज अभिनेत्री और क्लासिकल डांसर मधुमती का भी 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने अपने समय में आंखें, शिकारी, मुझे जीने दो जैसी फिल्मों से सिनेमा में अमिट छाप छोड़ी थी। मधुमती को उनके समय की हेलेन कहा जाता था, पर वे हमेशा अपनी शैली में अलग और विशिष्ट रहीं। उनके निधन से भारतीय सिनेमा का एक और स्वर्णिम अध्याय बंद हो गया।

पंकज धीर और मधुमती—दो ऐसे कलाकार जिन्होंने अपने समय में न केवल अभिनय किया बल्कि उसे एक नई परिभाषा दी। एक ने महाभारत के युग को पुनर्जीवित किया, तो दूसरी ने नृत्य की आत्मा को परदे पर जीवंत किया। आज दोनों नहीं हैं, पर उनकी कला अमर है, उनके किरदार अमर हैं।

## दिल्ली-मुंबई की हवा में घुलता जहर : IIT बॉम्बे की चेतावनी

मुंबई/नई दिल्ली। देश की दो बड़ी महानगरों दिल्ली और मुंबई की हवा अब केवल धूल ही नहीं, बल्कि घातक ग्रीनहाउस गैसों का मिश्रण भी है। IIT बॉम्बे की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, इन शहरों में कार्बन डाइऑक्साइड (CO) और मीथेन (CH) का स्तर लगातार बढ़ रहा है, जो न सिर्फ जलवायु के लिए खतरा है बल्कि लोगों की सेहत पर भी गंभीर असर डाल सकता है। रिपोर्ट में बताया गया कि बुधवार को दिल्ली का एयर क्वालिटी इंडेक्स (AQI) 201 दर्ज किया गया, जो 'खराब' श्रेणी में आता है। एक दिन पहले यह 211 था और विशेषज्ञों का अनुमान है कि शुक्रवार तक यह बढ़कर 346 तक पहुंच सकता है, यानी 'बहुत खराब' श्रेणी। इस स्तर की हवा बच्चों, बुजुर्गों और सांस की बीमारियों से जूझ रहे लोगों के लिए सीधा खतरा बन सकती है। लगातार प्रदूषण अस्थमा, हृदय रोग और फेफड़ों के कैंसर जैसी बीमारियों में इजाफा कर सकता है। मुंबई में मौसम के बदलाव के बाद AQI 153 दर्ज किया गया, जो 'मध्यम' श्रेणी में आता है। हालांकि यह स्तर दिल्ली से कम है, लेकिन स्वास्थ्य के लिहाज से हानिकारक माना जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार, मुंबई में प्रदूषण के प्रमुख स्रोत हैं वाहन उत्सर्जन, औद्योगिक अपशिष्ट और ठोस कचरे का जलना। अध्ययन का नेतृत्व प्रो. मनोरंजन साहू और रिसर्चर आदर्श अलगड़े ने किया। उन्होंने सैटेलाइट डेटा का उपयोग कर दिल्ली और मुंबई में ग्रीनहाउस गैसों का तुलनात्मक विश्लेषण किया। कार्बन डाइऑक्साइड के आंकड़े NASA की OCO-2 सैटेलाइट से और मीथेन के आंकड़े यूरोपियन स्पेस एजेंसी की सेंटिनल-5पी सैटेलाइट से प्राप्त किए गए।

## संपादकीय

# एक लाख स्कूलों में सिर्फ एक अध्यापक

यह आंकड़ा हमारे शिक्षा तंत्र की विफलता को दर्शाता है कि एक लाख से अधिक स्कूलों की पढ़ाई सिर्फ एक शिक्षक के भरोसे चल रही है। एक स्कूल की सारी कक्षाओं को एक शिक्षक कैसे पढ़ाता होगा? छात्र-छात्राएं कैसी और कितनी शिक्षा ग्रहण कर पाते होंगे, अंदाजा लगाना कठिन नहीं है। शिक्षा मंत्रालय के हालिया आंकड़े बताते हैं कि शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में एक लाख चार हजार स्कूल ऐसे थे, जो केवल एक शिक्षक के भरोसे चल रहे हैं। इन स्कूलों में करीब पौने चौंतीस लाख विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। बताया जाता है कि आंध्र प्रदेश में ऐसे स्कूलों की संख्या सबसे ज्यादा थी, जबकि उसके बाद उत्तर प्रदेश, झारखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक और लक्षद्वीप का स्थान है। एक तो हमारे देश में शिक्षा का बजट पहले ही बहुत कम है, फिर उस धन का सही उपयोग नहीं हो पाता। इसमें दो राय नहीं कि प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के गिरते स्तर के मूल में हमारे नीति-नियंताओं की अनदेखी ही प्रमुख कारक है। आखिर हम अपने नौनिहालों को कैसी शिक्षा दे रहे हैं? आखिर उनके बेहतर भविष्य की हम कैसे उम्मीद करें? जाहिर बात है कि एक शिक्षक सामाजिक विषय, भाषा, विज्ञान, अंग्रेजी और गणित में माहिर नहीं हो सकता। एक शिक्षक छात्रों की हाजिरी दर्ज करेगा या पढ़ाई कराएगा? शिक्षा का मतलब छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है। उन्हें पढ़ाई के साथ पाठ्यसहगामी क्रियाओं का भी ज्ञान दिया जाना जरूरी होता है। लेकिन जब स्कूलों में पर्याप्त शिक्षक ही नहीं होंगे तो किताबी पढ़ाई कैसी होगी, अंदाजा लगाना कठिन नहीं है। स्कूल में सिर्फ पढ़ाई ही महत्वपूर्ण नहीं होती। बच्चों का शारीरिक विकास पूरी तरह हो, उसके लिए खेल, पीटी और योग जैसी कक्षाओं की सख्त जरूरत होती है। लेकिन जब शिक्षक ही पर्याप्त नहीं होंगे तो शिक्षा के साथ चलने वाली गतिविधियों की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती है। निस्संदेह, हम छात्रों के बीमार भविष्य की बुनियाद ही रख रहे हैं।

सही मायनों में स्कूलों का शिक्षकों की कमी से जूझना शिक्षा विभाग की नाकामी को ही दर्शाता है। यह हमारे सत्ताधीशों की संवेदनहीनता का भी पर्याय है। शिक्षकों की नियुक्ति में जिस बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार के मामले विभिन्न राज्यों में सामने आए हैं, उससे शिक्षा विभाग की प्रदूषित कार्य संस्कृति का बोध होता है। आखिर क्या वजह है कि देश में प्रशिक्षित शिक्षकों की पर्याप्त संख्या होने के बावजूद स्कूलों में शिक्षकों की कमी बनी हुई है। यह स्थिति हमारे तंत्र की विफलता को ही उजागर करती है। एक समस्या यह भी है कि शिक्षक जटिल भौगोलिक स्थितियों वाले स्कूलों में काम करने से कतराते हैं। यदि इन स्कूलों में शिक्षकों की नियुक्ति हो भी जाती है तो वे दुर्गम से सुगम स्कूलों में अपना तबादला ज्वाइन करने के तुरंत बाद करवा लेते हैं। जिसमें राजनीतिक हस्तक्षेप से लेकर विभागीय लेन-देन की भी शिकायत होती रहती है। यही वजह है कि शहरों व आसपास के इलाकों में स्थित स्कूलों में शिक्षकों की तैनाती जरूरत से ज्यादा भी देखी जाती है। कैसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि सड़कों पर बेरोजगारों की लाइन लगी हैं और स्कूलों में शिक्षकों के लाखों पद खाली हैं। बताया जाता है कि माध्यमिक व प्राथमिक विद्यालयों में करीब साढ़े आठ लाख शिक्षकों के पद खाली हैं। इसके बावजूद कि हमारे यहां प्रशिक्षित शिक्षकों की कोई कमी नहीं है। कहने को तो हमारे गाल बजाते नेता भारत को दुनिया में सबसे ज्यादा युवाओं का देश कहते इतराते हैं, लेकिन इन नेताओं से पूछा जाना चाहिए कि कुंठित होती युवा पीढ़ी के लिये उन्होंने क्या खास किया है? नौकरियों की भर्ती निकलती नहीं है। निकलती है तो पेपर आउट होने की खबरें आती हैं। सालों-साल उनके परिणाम नहीं निकलते। यदि परिणाम निकले भी तो फिर धांधली के आरोप लगने लग जाते हैं। फिर मामला वर्षों तक अदालतों में डोलता रहता है। विडंबना यह भी है कि आज सरकारी स्कूलों में गरीब व कमजोर वर्गों के बच्चे ज्यादा भर्ती होते हैं, इसलिए इन स्कूलों की तरफ कोई ध्यान नहीं देता। यदि सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों के बच्चों के लिये इन स्कूलों में पढ़ना अनिवार्य कर दिया जाए तो स्थिति बदल जाएगी।

# इस्राइल-हमास युद्धविरामः आशा की किरण या अस्थायी विराम?

> “ अमेरिकी राष्ट्रपति ने इजरायली संसद को संबोधित करते हुए गाजा शांति समझौते को पश्चिम एशिया की ऐतिहासिक सुबह की संज्ञा दी। वे कुछ भी दावा करें, फिलहाल यह कहना कठिन है कि प्रमुख मुस्लिम देश इजरायल को मान्यता देने के लिए तैयार होंगे।

गाज़ा की धरती लम्बे दौर से संघर्ष, हिंसा, विनाश और तबाही की त्रासदी की गवाह रही है, आज फिर एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहाँ शांति की एक हल्की किरण दिखाई तो देती है, परंतु उसके चारों ओर धुएँ और राख का अंधकार अब भी विद्यमान है। हाल ही में हुए युद्ध-विराम ने न केवल मध्यपूर्व बल्कि समूचे विश्व को राहत की एक साँस दी है। गाजा में अमन-चैन की ओर जो सुखद कदम बढ़े हैं, उनका स्वागत होना चाहिए। परंतु यह सवाल भी उतना ही प्रासंगिक है कि क्या यह शांति स्थायी होगी, या यह केवल अगली लड़ाई से पहले का ठहराव भर है? समूची दुनिया चाहती है कि यह युद्ध विराम स्थायी हो क्योंकि इस्राइल और हमास के संघर्ष ने करीब बाइस लाख से अधिक लोगों को बेघर करके भुखमरी के कगार पर पहुंचा दिया है। ऐसे में दोनों पक्षों के लिये समझौते के पहले चरण को पूरी तरह से लागू करना बेहद जरूरी होगा। जिसमें बंधकों व कैदियों की रिहाई, गाजा में मानवीय सहायता को अनवरत जारी रखना और इस्राइली सेनाओं की गाजा के मुख्य शहरों से आंशिक वापसी सुनिश्चित करना भी शामिल है। यह सब दूसरे चरण की बातचीत पर निर्भर हैं।यदि सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो इसके बाद ही दूसरे चरण की बातचीत की प्रक्रिया शुरू हो सकती है। यह बेहद मुश्किल चुनौतियों वाला चरण होगा। इस दौरान कई संवेदनशील मुद्दे सामने होंगे। सबकी निगाह इस पर होगी कि शांति समझौते के अगले चरण कब पूरे होते हैं और वे सही तरह पूरे होते भी हैं या नहीं? इस पर संशय इसलिए है, क्योंकि यह स्पष्ट नहीं कि इजरायली सेना गाजा में कितना पीछे हटेगी और वहां के प्रशासन को संचालित करने का कैसा तंत्र तैयार होगा और क्या उस पर हमास सहमत होगा? इसके अतिरिक्त जहां हमास को हथियार छोड़ने हैं, वहीं इजरायल को स्वतंत्र फिलस्तीन देश की राह आसान



करनी है। हमास का कहना है कि हथियार तब छोड़े जाएंगे, जब स्वतंत्र फिलस्तीन का रास्ता साफ होगा। इस पर इजरायल तैयार नहीं दिख रहा है। यह ठीक है कि स्वयं की ओर से प्रस्तावित गाजा शांति समझौते पर अमल शुरू होने के अवसर पर मिस्र जाने के पहले इजरायल पहुंचे अमेरिकी राष्ट्रपति ने अपनी पहल को पश्चिम एशिया में शांति की स्थापना का पथ करार दिया और इजरायली प्रधानमंत्री से ईरान से समझौता करने को कहा। ऐसे किसी समझौते की सूरत तब बनेगी, जब ईरान इजरायल को मिटाने की अपनी जिद छोड़ेगा।

गाज़ा की वर्तमान स्थिति किसी एक राष्ट्र या एक नीति की देन नहीं है; यह दशकों से चली आ रही अविश्वास, असमानता और राजनीतिक स्वार्थों की परिणति है। इस बार के संघर्ष ने जिस तरह से निर्दोष नागरिकों, बच्चों और महिलाओं को अपना शिकार बनाया, उसने यह स्पष्ट कर दिया कि युद्ध चाहे किसी भी नाम पर लड़ा जाए, उसका परिणाम हमेशा मानवीय त्रासदी ही होता है। अस्पताल, विद्यालय, धार्मिक स्थल-कोई भी स्थान सुरक्षित नहीं रहा। अमेरिकी मध्यस्थता वाले युद्धविराम समझौते के बाद हमास ने आखिरकार शेष जीवित बचे बीस इस्राइली बंधकों को रिहा कर दिया। जिसके बाद इस्राइल में किसी बड़े उत्सव जैसा जश्न दिखा। बहरहाल, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि अभी भी इस्राइल-हमास जोखिमभरा युद्धविराम समझौता नाजुक बना हुआ है। इसकी वास्तविक परीक्षा आने वाले दिनों में होगी। इस संघर्षरत क्षेत्र में स्थायी शांति सुनिश्चित करने के लिये जरूरी है कि प्रमुख हितधारकों की ओर से गंभीर एवं ईमानदार प्रयास लगातार होते रहें। वर्तमान समय में सबसे बड़ी चुनौती भूतहा खण्डहर एवं तबाही में तब्दील हो चुके गाजा के पुनर्निर्माण की होगी। दो साल से लगातार जारी युद्ध के चलते यह इलाका मलबे के ढेर में तब्दील हो चुका है।

एक नाजुक समय में जब युद्धविराम की घोषणा हुई, तो यह केवल एक राजनीतिक निर्णय नहीं है, बल्कि मानवीय विवेक का पुनर्जागरण भी है। यह समझना आवश्यक है कि शांति कोई समझौता नहीं, बल्कि एक अनिवार्य आवश्यकता है। यही कारण है कि यह युद्धविराम पूरी मानवता के लिए एक ‘आशा की किरण’ बनकर उभरा है। यह उस संभावना का प्रतीक है कि जब दुनिया के शक्तिशाली देश, विशेषकर अमेरिका, यूरोप, और अरब राष्ट्र अपनी राजनीतिक प्राथमिकताओं से ऊपर उठकर मानवीय सरोकारों को महत्व देते हैं, तो समाधान की दिशा में रास्ता बनता है। फिर भी इस शांति की वास्तविकता पर प्रश्नचिह्न बने हुए हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भले ही इस युद्धविराम को अपने कूटनीतिक प्रयासों की उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया हो, पर सच यह है कि युद्ध तब रुका जब उसकी भयावहता अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। यह विराम किसी की “कूटनीति की जीत” से अधिक, मानवीय विवशता की उपज है। अंतरराष्ट्रीय दबाव, मानवीय संगठनों की सक्रियता और आम नागरिकों की पुकार ने मिलकर इस विराम को संभव बनाया। अब सबसे बड़ी चुनौती यह है कि यह शांति टिके, युद्ध का अंधेरा नहीं, शांति का उजाला फैले। क्योंकि जब तक गाज़ा के लोगों को जीवन की मूलभूत सुविधाएँ-पानी, भोजन, दवा, शिक्षा और सम्मानजनक जीवन नहीं मिलते, तब तक शांति केवल कागज़ों पर दर्ज रहेगी। वास्तविक शांति केवल तब संभव है जब अन्याय, दमन और असमानता के ढाँचे टूटें। शांति का अर्थ केवल हथियारों का मौन नहीं, बल्कि हृदयों का परिवर्तन है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने इजरायली संसद को संबोधित करते हुए गाजा शांति समझौते को पश्चिम एशिया की ऐतिहासिक सुबह की संज्ञा दी। वे कुछ भी दावा करें, फिलहाल यह कहना कठिन है कि प्रमुख मुस्लिम देश इजरायल को मान्यता देने के लिए तैयार होंगे। भले ही ट्रंप यह कह रहे हों कि गाजा शांति समझौते को सभी मुस्लिम देशों का समर्थन मिला, लेकिन वस्तुस्थिति इससे अलग है। जब यह समझौता सामने आया था, तब उसे समर्थन देने और ट्रंप की प्रशंसा करने वालों में पाकिस्तान भी था, पर अब वह इस समझौते को समर्थन देने से केवल पीछे ही नहीं हट गया, बल्कि उसने अपने यहां ऐसा माहौल बनाया कि उसके विरोध में कट्टरपंथी तत्व सड़क पर उतर आए। यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि पाकिस्तान ने गाजा शांति समझौते को नकारने के लिए ही कट्टरपंथी तत्वों को सड़कों पर उतरने के लिए उकसाया और फिर उन पर गोलियां भी चलवाईं, ताकि दुनिया और विशेष रूप से अमेरिका को यह संदेश जाए कि उसके लिए गाजा शांति समझौते को स्वीकार करना संभव नहीं। यहां अमेरिका को पाक के दोहरे चरित्र को समझ लेना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ, अरब लीग और विश्व की सभी बड़ी शक्तियों की जिम्मेदारी है कि वे इस युद्धविराम को केवल घोषणा भर न रहने दें। उसे स्थायी बनाने के लिए एक ठोस मानवीय पुनर्निर्माण योजना तैयार की जाए, जिसमें राजनीतिक समाधान, मानवीय सहायता और संवाद-तीनों को समान महत्व मिले। गाज़ा के बच्चे जब फिर से स्कूलों में लौटेंगे, जब शरणार्थी अपने घरों में बस सकेंगे, जब भय की जगह भरोसा जन्म लेगा, तभी यह कहा जा सकेगा कि गाज़ा में शांति आई है। इजरायल को यहां ज्यादा उदारता का परिचय देना होगा, क्योंकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह बहुत ताकतवर है। हमास को भी हिंसा से बचना चाहिए। द्वि-राष्ट्रीय व्यवस्था को जमीन पर ठीक से साकार करना हमास का लक्ष्य होना चाहिए । हमास को अपनी छवि सुधारने की चिंता करनी चाहिए, अगर उस पर यकीन किया गया है, तो उसे खरा उतरना होगा। गाजा में किसी भी सूरत में हिंसा की वापसी नहीं होनी चाहिए। आज यह युद्धविराम भले ही ‘एक आशा की किरण’ बना हो, परंतु उसे स्थायी प्रकाश में बदलना विश्व समुदाय के विवेक, संवेदनशीलता और सतत प्रयास पर निर्भर करता है।

## प्रेरणा

# अंतहीन भक्ति : जब निर्धन ब्राह्मण ने अर्जुन का घमंड तोड़ा

एक बार की बात है। द्वारका में भगवान श्रीकृष्ण अपने प्रिय सखा अर्जुन के साथ बैठे थे। दोनों के बीच धर्म, नीति और लोककल्याण की बातें चल रही थीं। अर्जुन अपने मन में एक हल्का गर्व महसूस कर रहा था। उसे लगता था कि उसने भगवान के इतने निकट रहकर वह अनुभव किया है, जो शायद किसी और को न मिला हो। वह सोचता था कि श्रीकृष्ण ने स्वयं उसे अपना सारथी बनाया, गीता का ज्ञान दिया, और अपनी अनंत कृपा उस पर बरसाई। यह भावना धीरे-धीरे उसके भीतर एक सूक्ष्म अहंकार में बदलने लगी।

श्रीकृष्ण सर्वज्ञ थे। वे अपने भक्तों के मन के सबसे गहरे भाव को भी देख लेते हैं। उन्होंने मुस्कराते हुए अर्जुन से कहा, “पार्थ, चलो आज तुम्हें एक सच्चा भक्त दिखाता हूं। जो भक्ति के अर्थ को किसी शास्त्र से नहीं, अपने हृदय से समझता है।” अर्जुन उत्सुक हो उठा। वे दोनों द्वारका से निकल पड़े।

कुछ दूर जाने पर एक नदी के तट पर पहुंचे। वहां एक साधारण सी झोपड़ी थी, जिसके पास एक कृशकाय ब्राह्मण बैठा था। उसके वस्त्र फटे-पुराने थे, शरीर पर हड्डियाँ झलक रही थीं, और वह सूखी घास चबा रहा था। उसके चेहरे पर भक्ति की अद्भुत आभा थी, परंतु कमर में एक तलवार लटक रही थी। अर्जुन को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा, “यह कैसा ब्राह्मण है जो तपस्या तो कर रहा है, पर तलवार धारण किए हुए है?”

उसने आगे बढ़कर पूछा, “हे ब्राह्मण! आप कौन हैं? यह कैसी तपस्या कर रहे हैं, और यह तलवार क्यों धारण की है? ब्राह्मण के लिए यह तो अनुचित है।”

ब्राह्मण ने शांत स्वर में उत्तर दिया, “पार्थ, मैं एक निर्धन ब्राह्मण हूँ, जीवन में कुछ नहीं चाहता, परंतु मेरे पाँच शत्रु हैं जिन्हें दंड देने की इच्छा मेरे भीतर है। उसी हेतु यह तलवार रखी है।”

अर्जुन चकित रह गया, “पाँच शत्रु? और वह भी आपके? कौन हैं वे? क्या कोई अत्याचारी राजकुमार, कोई दुष्ट व्यापारी या कोई अपमान करने वाला व्यक्ति?”

ब्राह्मण मुस्कुराया और कहा, “नहीं पार्थ, वे कोई सांसारिक शत्रु नहीं। वे तो वे हैं जिन्होंने मेरे प्रियतम प्रभु श्रीकृष्ण को कष्ट पहुँचाया है। पहला है नारद मुनि—जो निरंतर भगवान का नाम जपते रहते हैं, उन्हें विश्राम तक नहीं लेने देते। प्रभु तो सबके पालनहार हैं, पर नारद जी उनके कानों में दिन-रात ‘नारायण नारायण’ का स्वर गुंजाते रहते हैं। प्रभु कब विश्राम करें?”

अर्जुन कुछ बोलने ही वाला था कि ब्राह्मण आगे बोला, “दूसरी है द्रौपदी। उसने एक बार भगवान को भोजन के मध्य ही पुकार लिया। प्रभु उस समय भोजन कर रहे थे, पर द्रौपदी की पुकार सुनकर अधभोजन छोड़कर उन्हें पांडवों को दुर्वासा ऋषि के शाप से बचाने जाना पड़ा। सोचो, भूखे ही उन्हें दौड़ना पड़ा। तीसरी है शबरी। उसने अपने जूठे बेर प्रभु को खिलाए। भले उसका भाव शुद्ध था, पर प्रभु का मुख जूठे फलों से भर गया। कितना कष्ट सहा होगा उन्होंने!”

अर्जुन मौन हो गया। वह ब्राह्मण जैसे किसी अदृश्य भावलोक में डूबा हुआ बोल रहा था। उसकी आँखों में करुणा और श्रद्धा का सागर लहरा रहा था।

“चौथा है प्रह्लाद,” ब्राह्मण ने कहा, “उसने तो प्रभु को असह्य पीड़ा दी। भक्त को बचाने के लिए उन्हें स्तंभ तोड़कर नरसिंह रूप में प्रकट होना पड़ा। कितना भयानक रूप! अपने ही नाखूनों से हिरण्यकशिपु का वध किया, शरीर पर रक्त लगा, फिर भी मुस्कराए। पर क्या किसी ने सोचा कि उन्हें कैसा अनुभव हुआ होगा? भक्त की रक्षा के लिए उन्होंने कैसी वेदना सही!”

अर्जुन का हृदय अब काँपने लगा। वह समझ नहीं पा रहा था कि यह ब्राह्मण कितना गहरा भाव रखता है।

ब्राह्मण बोला, “और पाँचवाँ शत्रु है तुम, अर्जुन।” यह सुनकर अर्जुन हड़बड़ा गया। उसने कहा, “मैं? मैंने क्या अपराध किया?”

ब्राह्मण की आँखों से आँसू बहने लगे। वह बोला, “तुमने उन्हें युद्धभूमि की धूल में ला खड़ा किया। प्रभु, जो सृष्टि के नियंता हैं, जिन्हें देवता पूजते हैं, उन्हें रथ का सारथी बना दिया। उन्हें घोड़े की लगाम पकड़नी पड़ी, पसीने से शरीर भीग गया, युद्ध की धूल से मुख ढक गया। सोचो, कितना कष्ट हुआ होगा मेरे प्रभु को।”

यह कहते हुए ब्राह्मण रो पड़ा। उसकी वाणी रुद्ध हो गई। उसकी आँखों से बहते आँसू उस सूखी घास पर गिर रहे थे, जैसे जल की बूँदें किसी सूखी धरती को जीवन दे रही हों।

अर्जुन उस क्षण निःशब्द रह गया। उसका सारा गर्व, सारा अभिमान गल गया। उसे एहसास हुआ कि वह भक्ति को केवल अपने अनुभव से आंक रहा था, पर भक्ति की गहराई तो इस निर्धन ब्राह्मण के भीतर है, जिसने भगवान के लिए करुणा के आँसू बहाए।

वह श्रीकृष्ण के चरणों में झुक गया और बोला, “प्रभु, अब समझा कि भक्ति का कोई अंत नहीं। कोई आपको प्रेम से याद करता है, कोई आपकी सेवा करता है, कोई आपका नाम जपता है, और कोई आपके दुःख को अपना बना लेता है। मैं तो कुछ भी नहीं हूँ, केवल एक सेवक।”

श्रीकृष्ण ने अर्जुन के सिर पर हाथ रखा। वे मुस्कराए और बोले, “पार्थ, यही सच्ची भक्ति है — जब भक्त अपने ईश्वर के सुख-दुःख में एक हो जाता है, जब वह स्वयं को नहीं, केवल मुझे देखता है। यह ब्राह्मण निर्धन नहीं है, यह तो भक्ति का धनी है, जिसने प्रेम का रहस्य जान लिया है।”

कहते हैं, उस दिन के बाद अर्जुन का मन पहले जैसा नहीं रहा। उसका अहंकार मिट गया और उसकी दृष्टि बदल गई। उसने उस ब्राह्मण के चरणों में प्रणाम किया और मन-ही-मन कहा, “सचमुच, इस संसार में जितने जीव हैं, उतने ही भक्ति के रूप हैं। किसी की भक्ति में वंदना है, किसी की में करुणा, और किसी की में समर्पण। पर सबसे महान वह है, जो अपने ईश्वर की पीड़ा को भी अपने प्रेम का हिस्सा बना ले।”

उस दिन द्वारका के आकाश में जैसे एक अनदेखी शांति फैल गई थी। श्रीकृष्ण की आँखों में करुणा थी, अर्जुन के हृदय में नम्रता, और उस निर्धन ब्राह्मण की सूखी झोपड़ी में ईश्वर की पूर्ण उपस्थिति। यही थी — अंतहीन भक्ति।

# आखिर गठबंधन की ‘गदहपचीसी’ में कबतक उलझा रहेगा बिहार? बताएं नेता-मतदातागण!

सिद्धांत विहीन गठबंधन की राजनीति से किसी भी जीवंत लोकतंत्र का कदापि भला नहीं हो सकता है। बिहार इसका दिलचस्प उदाहरण बन चुका है। यहां पर नीति और नियम दोनों का माखौल उड़ाया जा रहा है। चाहे एनडीए हो या इंडिया महागठबंधन (पूर्व नाम यूपीए), दोनों जगहों पर टिकट बंटवारे में जितनी सिरफुटौव्वल दिखाई पड़ी, उससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि यदि मतदाताओं ने समझदारी नहीं दिखाई तो 14 नवम्बर से सरकार बनाने के लिए हॉर्स ट्रेडिंग होना तय है।

सच कहूं तो इस फजीहत भरी सियासी स्थिति के लिए भाजपा और कांग्रेस का केंद्रीय नेतृत्व भी कम जिम्मेदार नहीं है, क्योंकि उनके बीच बारहों मास चलते रहने वाले शह और मात के अनैतिक खेल से उनके क्षेत्रीय सहयोगियों के इकबाल बुलंद रहते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली जदयू और पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव (सुपुत्र पूर्व मुख्यमंत्रीद्वय लालू यादव व राबड़ी देवी) तो महज इनके हथकंडे मात्र हैं।

लेकिन कभी एक-दूसरे की सियासी उन्नति की सहायक रहे नीतीश कुमार और लालू यादव इतने सजग रहते हैं कि इन्होंने एक-दूसरे का प्रबल विरोधी रहने के बावजूद दो-दो बार आपस में हाथ मिलाने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई। इन्होंने भाजपा-कांग्रेस की सियासी तिकड़मों को बिहार में कभी सफल नहीं होने दिया। खास बात यह कि बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के टिकट बंटवारे से पहले भी इन्होंने यानी जदयू ने भाजपा को और राजद ने कांग्रेस को, उनके गठबंधन सहयोगियों को उकसाकर जो गुप्त सियासी खेल खेला है, उससे राजनीतिक विश्लेषकों का भी दंग रह जाना स्वाभाविक है। जदयू का यह कहना कि लोजपा आर, हम और रालोमो को भाजपा मैनेज करे, यह एक गहरी सियासी चाल है! वहीं तेजस्वी यादव के परोक्ष इशारे पर वीवीआईपी प्रमुख मुकेश सहनी द्वारा कांग्रेस पर तंज कसना और कांग्रेस को पिछली बार से भी कम सीटें ऑफर करना, साथ ही भाकपा माले द्वारा अधिक सीटों की मांग करना यह जाहिर करता है कि राजद अपने सहयोगियों को सीट बंटवारे के दौरान इतना कमजोर रखना चाहता है कि कि चुनाव परिणाम आने के बाद भी इनकी मोलभाव की ताकत कम रहे। यही पेंच जदयू की भी है, लेकिन भाजपा ने उसे 122 से 101 तक झुकाकर अपनी बढ़त बना ली है। इस बात में कोई दो राय नहीं कि गठबंधन की बुनियाद पर लड़े जा रहे चुनाव में पहली और बड़ी चुनौती यही रहती है कि गठबंधन के भीतर किस तरह से सहयोगी दलों की राजनीतिक महत्वाकांक्षा और जमीनी हकीकत के बीच तालमेल बिठाया जाए यानी कि सही संतुलन साधा जाए। इस नजरिए से बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए ने सहयोगियों के बीच सीटों की संख्या के बंटवारे की गुत्थी पहले ही सुलझाकर शुरुआती बढ़त हासिल कर ली है, लेकिन सीटों के बंटवारे का असली पेंच यहां भी खबर लिखे जाने तक फंसा हुआ है।

सियासी टिप्पणीकारों की मानें तो बिहार में राजग या महागठबंधन के 2020 के मुकाबले 2025 में गठबंधनों के बाहर ही नहीं, बल्कि भीतर भी समीकरण बदल चुके हैं, जिसका तीखा असर सीट शेयरिंग पर भी दिख रहा है। एनडीए में जदयू और बीजेपी बराबर-बराबर सीटों पर मैदान में हैं, जबकि बाकी दलों को उनकी मांग से काफी कम सीटों पर ही संतोष करना पड़ा है। जिससे वे लोग बाहर से खुश और अंदर से नाखुश हैं। उनकी सियासी कविताएं इसी बात की चुगली करती हैं। हालांकि गठबंधन के लिए अच्छी बात यह होगी कि किसी सहयोगी दल ने खुलेआम नाखुशी जाहिर नहीं की है, क्योंकि अब में निर्विकल्प हो चुके हैं।

जानकारों की मानें तो बिहार विधानसभा चुनाव 2025 मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सामने एक नहीं बल्कि कई चुनौतियां लेकर आया है। भले ही वृद्ध हठ के अनुरूप इस चुनाव में भी राजग का चेहरा नीतीश कुमार ही हैं, लेकिन बड़े भाई वाली उनकी पार्टी की भूमिका अब बराबर वाली हो चुकी है। पिछले दो दशकों से यही कहानी रही है कि उनके साथ में भाजपा रही हो या राजद, सीटें कम आई हों या ज्यादा -नीतीश कुमार ही मुख्यमंत्री बने। बीच में कुछ समय के लिए जीतन राम मांझी को मुख्यमंत्री उन्होंने ही बनवाया था। इसप्रकार वर्ष 2005 से ही वह मुख्यमंत्री पद पर बने हुए हैं। हालांकि इस चुनाव में उनकी राह आसान नहीं लग रही है, क्योंकि भाजपा, लोजपा आर, हम और रालोमो का दबाव उनपर है। वहीं, कानून-व्यवस्था को चुनौती देते अपराधियों की टीम और उनके सहयोगियों पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों ने उनकी सुशासन बाबू वाली छवि को गहरी चोट पहुंचाई है। हालांकि मोदी नाम केवलम के दम पर तो उनकी चुनावी नैया पार लग जाएगी। लेकिन यह देखना दिलचस्प होगा कि पिछली बार की तरह अगर इस बार भी उन्हें भाजपा से कम सीटें मिलती हैं, तब भी क्या सीएम की कुर्सी पर उनका दावा बना रहेगा या फिर चुनाव बाद कोई नया राजनीतिक खेल शुरू होगा। वहीं, राजद की मुश्किल अलग प्रकार की है। कहा जा रहा है कि एनडीए ने जिस फॉर्म्युले को समय रहते ही सुलझा लिया, उसी फॉर्मूले तक पहुंचने में महागठबंधन को अभी काफी पापड़ बेलने पड़ेंगे और कांग्रेस आलाकमान की कठिन परीक्षा से उन्हें गुजरना है। क्योंकि इस बार कांग्रेस ने बिहार में पहले से भी अधिक सीटों की आस लगाई है।

## अभियान

# धनतेरस पर झाड़ू खरीदने की परंपराः लक्ष्मी के आगमन का गूढ़ रहस्य

धनतेरस का नाम सुनते ही मन में दीपावली की खुशबू घुल जाती है, घर-आंगन में सफाई का उत्साह दिखने लगता है, बाजारों में रौनक छा जाती है और हर तरफ लक्ष्मी के स्वागत की तैयारी शुरू हो जाती है। इस दिन को ‘धन’ और ‘आरोग्य’ की प्राप्ति का दिन माना गया है, क्योंकि इसी दिन समुद्र मंथन से भगवान धन्वंतरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। इसलिए यह दिन स्वास्थ्य, समृद्धि और शुभता का प्रतीक माना जाता है। लेकिन इसी दिन एक परंपरा ऐसी भी है जो हर घर में पीढ़ी-दर-पीढ़ी निभाई जाती है — और वह है नई झाड़ू खरीदने की। दादी-नानी हमेशा कहती हैं, “धनतेरस के दिन झाड़ू जरूर खरीदना बेटा, इससे मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।” इस कहावत के पीछे सिर्फ एक लोकविश्वास नहीं, बल्कि गहरा आध्यात्मिक रहस्य छिपा है। प्राचीन काल से ही भारत में झाड़ू को केवल सफाई का साधन नहीं, बल्कि “ऊर्जा परिवर्तन” का प्रतीक माना गया है। ऋग्वेद और अथर्ववेद जैसे ग्रंथों में स्वच्छता को देवत्व से जोड़ा गया है — जहां स्वच्छता होती है, वहां दिव्यता का वास होता है। झाड़ू का अर्थ केवल मिट्टी और कचरा



हटाना नहीं, बल्कि उस नकारात्मक और स्थिर ऊर्जा को दूर करना भी है जो घर में लंबे समय से जमी रहती है। जब झाड़ू घर में लगाई जाती है, तो उसके हर स्पर्श के साथ वह ऊर्जा कंपन को बदलती है, जिससे वातावरण में ताजगी और गति आती है। इसी को वास्तुशास्त्र में “प्राणिक शुद्धि” कहा गया है।

वास्तु के अनुसार झाड़ू मां लक्ष्मी की बहन “अलक्ष्मी” को बाहर निकालने का साधन है। कहा जाता है कि जहां गंदगी, कलह और आलस्य होता है, वहां अलक्ष्मी निवास करती हैं। और जहां स्वच्छता, अनुशासन और सच्चाई होती है, वहां लक्ष्मी का स्थायी वास होता है। इसीलिए कहा गया है कि जो घर रोज साफ-सुथरा रहता है, वहां दरिद्रता नहीं टिकती। धनतेरस का दिन इसलिए चुना गया कि इस दिन खरीदी गई हर वस्तु शुभ और बढ़ोत्तरी देने वाली मानी जाती है। जब आप इस दिन नई झाड़ू खरीदते हैं, तो यह संकेत होता है कि आप अपने जीवन और घर से पुरानी, निष्क्रिय और नकारात्मक ऊर्जा को बाहर निकालकर नई शुभ ऊर्जा का स्वागत कर रहे हैं।

शास्त्रों में झाड़ू को शनि देव का प्रतीक भी बताया गया है। शनि ग्रह कर्म, अनुशासन और न्याय के देवता हैं। झाड़ू उनके द्वारा नियंत्रित ऊर्जा का प्रतीक है क्योंकि यह असमानता और आलस्य को हटाकर संतुलन और स्वच्छता लाती है। जो व्यक्ति नियमपूर्वक घर में झाड़ू लगाता है, उसके जीवन में शनि की कृपा बनी रहती है, उसके कर्मों की दिशा सही रहती है और उसे धीरे-धीरे आर्थिक स्थिरता प्राप्त होती है। यही कारण है कि दादी-नानी कहती हैं कि झाड़ू को कभी पैर नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि यह शनि और लक्ष्मी – दोनों की ऊर्जा को धारण करती है।

धनतेरस पर झाड़ू खरीदने का एक और गूढ़ कारण यह है कि यह दिन दीपावली की शुरुआत का प्रतीक है। दीपावली “अंधकार से प्रकाश की यात्रा” का उत्सव है। और झाड़ू वह पहला साधन है जो अंधकार, गंदगी और रुकावटों को दूर करता है। जिस घर में सफाई होती है, वहां हवा में ही एक प्रकार की सकारात्मक लहरें बहती हैं, जिससे मन शांत और वातावरण सुखद बनता है। यही वह मानसिक स्थिति है जिसमें मां लक्ष्मी का आगमन होता है।

जब घर में नई झाड़ू आती है, तो यह केवल एक वस्तु नहीं होती, बल्कि “नव-संस्कार” की शुरुआत होती है। इसलिए कहा गया है कि धनतेरस के दिन झाड़ू खरीदते समय उसे खुले में या सबके सामने नहीं लाना चाहिए। इसे चुपचाप घर में लाया जाए और दक्षिण-पश्चिम दिशा में रखा जाए। यह दिशा स्थिरता और धन के संचय की दिशा मानी गई है। इस दिन पुरानी झाड़ू को बाहर निकाल देना भी शुभ होता है, जिससे पुराना कर्म, पुरानी ऊर्जा और पुरानी बाधाएं जीवन से विदा हो जाएं।

लोककथाओं में यह भी कहा जाता है कि जब झाड़ू से घर साफ किया जाता है तो मां लक्ष्मी के आने का मार्ग प्रशस्त होता है। कई गांवों में महिलाएं धनतेरस की शाम को आंगन में गोबर और गेरू से चित्र बनाती हैं और दरवाजे के दोनों ओर दीपक जलाकर कहती हैं – “मां लक्ष्मी, इस आंगन में पधारो।” झाड़ू को घर के द्वार के पास खड़ा रखा जाता है ताकि लक्ष्मी का प्रवेश शुद्ध और स्वच्छ मार्ग से हो।

इस परंपरा का आध्यात्मिक रूप से यह भी अर्थ है कि जब हम झाड़ू खरीदते हैं और उससे सफाई करते हैं, तो हम केवल घर की नहीं बल्कि अपने भीतर की सफाई भी कर रहे होते हैं। हमारा मन, जो इच्छाओं, ईर्ष्या और क्रोध की धूल से ढका रहता है, जब साफ होता है तभी लक्ष्मी अर्थात “आध्यात्मिक प्रकाश और प्रसन्नता” का प्रवेश होता है। झाड़ू इस सफाई का बाह्य प्रतीक है। इसलिए जब दादी-नानी कहती हैं, “धनतेरस पर झाड़ू जरूर खरीदना, इससे लक्ष्मी का वास होता है,” तो वे केवल परंपरा नहीं निभा रही होतीं, बल्कि जीवन के सबसे गहरे सिद्धांत को सिखा रही होती हैं — कि समृद्धि वहीं टिकती है जहां स्वच्छता, सादगी और सजगता होती है। धनतेरस का दिन हमें यही संदेश देता है कि लक्ष्मी पाने का सबसे सरल मार्ग है – अपने घर, अपने मन और अपने कर्म को निर्मल रखना। जब भीतर और बाहर दोनों स्वच्छ हो जाते हैं, तभी धन, स्वास्थ्य और शांति तीनों एक साथ हमारे जीवन में उतर आते हैं।

इस प्रकार, धनतेरस पर झाड़ू खरीदना केवल एक धार्मिक रीति नहीं, बल्कि एक सूक्ष्म विज्ञान, एक ऊर्जात्मक पुनर्जन्म और मां लक्ष्मी के स्वागत का सबसे पवित्र प्रतीक है — जो हर वर्ष हमें याद दिलाता है कि समृद्धि का पहला कदम स्वच्छता से शुरू होता है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

# मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद में दो दिवसीय 'नेशनल अर्बन कॉन्क्लेव' तथा 'मेयरल समिट' का शुभारंभ कराया

**प्रधानमंत्री ने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में देश में सर्वप्रथम 'शहरी विकास वर्ष' जैसे कॉन्सेप्ट शुरू किए और लोगों का 'ईज ऑफ लिविंग' सुनिश्चित किया : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल**

**-: मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-**

- कॉन्क्लेव में सरदार पटेल की शहरी विकास की तत्कालीन विचारधारा को आधुनिक विकास के साथ जोड़ने पर होगा चिंतन-मंथन
- 100 वर्ष पहले सरदार पटेल ने अपनी प्रशासनिक कुशलता से सुव्यवस्थित अर्बन प्लानिंग द्वारा आदर्श शहर का निर्माण करके देश को सिटीजन-सेंट्रिक लोकल एडमिनिस्ट्रेशन का अनूठा मॉडल दिया
- प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में अहमदाबाद ने वर्ल्ड हेरिटेज सिटी के साथ-साथ वर्ल्ड क्लास सिटी की श्रेणी में भी गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया
- साबरमती रिवरफ्रंट समग्र भारत के लिए अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन का एक आदर्श मॉडल बना

**भारत के विभिन्न शहरों के मेयर, कमिशनर तथा प्रतिनिधि कॉन्क्लेव में उपस्थित रहे**



गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बुधवार को अहमदाबाद में दो दिवसीय 'नेशनल अर्बन कॉन्क्लेव' तथा 'मेयरल समिट' का शुभारंभ कराया। देश के प्रथम उप प्रधानमंत्री तथा गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में केन्द्र सरकार तथा अहमदाबाद महानगर पालिका द्वारा इस कॉन्क्लेव एवं समिट का आयोजन किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस अवसर पर कहा कि सार्वजनिक जीवन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल के 24 पूर्ण होने के अवसर पर राज्यभर में विकास सप्ताह मनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सबसे पहली बार राजनीति में 'विकास' शब्द को सक्रिय रूप से व्यापक बनाया है।

श्री पटेल ने कहा कि यह कॉन्क्लेव एवं समिट अहमदाबाद के लिए विशेष है, कारण कि आज समग्र देश प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती मना रहा है। ऐसे में इस कॉन्क्लेव में इस विषय पर चिंतन-मंथन किया जाएगा कि सरदार पटेल की शहरी विकास की तत्कालीन विचारधारा को आधुनिक विकास के साथ कैसे जोड़ा जाए।

अहमदाबाद के विकास में सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान के ऐतिहासिक तथ्यों का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सरदार साहब ने 1924 से 1928 के दौरान तत्कालीन अहमदाबाद नगर पालिका के अध्यक्ष के रूप में अपनी प्रशासनिक जिम्मेदारी की शुरुआत की थी। सरदार साहब ने लगभग 100 वर्ष पहले अपनी प्रशासनिक कुशलता तथा सुव्यवस्थित अर्बन प्लानिंग द्वारा आदर्श शहर का निर्माण कर देश को सिटीजन-सेंट्रिक लोकल लोकल एडमिनिस्ट्रेशन का अनूठा मॉडल दिया था।

श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल से लेकर देश के प्रधानमंत्री के रूप में सरदार पटेल के इन्हीं विचारों से प्रेरित रहते हुए देश में शहरी विकास में परिवर्तन से नई क्रांति लाए हैं। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में अहमदाबाद शहर ने वर्ल्ड हेरिटेज सिटी के साथ-साथ वर्ल्ड क्लास सिटी की श्रेणी में भी गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया है।

उन्होंने आगे कहा कि अहमदाबाद का विश्व प्रसिद्ध साबरमती रिवरफ्रंट देश के अन्य शहरों के लिए अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन का आदर्श मॉडल बना है। इसके अतिरिक्त; श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में देश में सबसे पहली बार 'शहरी विकास वर्ष' का जो कॉन्सेप्ट दिया, वह लोगों के 'ईज ऑफ लिविंग' को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। मुख्यमंत्री ने जोड़ा कि हम उन्हीं के विचारों से प्रेरणा लेकर 2025 को 'शहरी विकास वर्ष' के रूप में मना रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने अर्बन मोबिलिटी के बारे में कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी देश के ऐसे प्रथम मुख्यमंत्री थे, जिन्होंने शहरों के लिए सफल बीआरटीएस जनमार्ग मॉडल का विचार दिया। आज मेट्रो तथा हाईस्पीड रेल परियोजनाओं के माध्यम से मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट में अहमदाबाद अर्बन मोबिलिटी के लिए एक आदर्श बन रहा है।

उन्होंने आगे कहा कि पिछले दो दशक में प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में राज्य में शहरीकरण का स्तर बहुत बढ़ा है और अमृत 2.0 एवं स्वच्छ भारत मिशन 2.0 जैसे प्रोजेक्ट्स द्वारा शहरी ढाँचे को परिवर्तित करने का कार्य हो रहा है।

उन्होंने कहा कि यह कॉन्क्लेव प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में हमारे शहरों को विकसित भारत@2047 के अनुरूप बनाने, इनोवेशन को प्रोत्साहन देने तथा सस्टेनेबल डेवलपमेंट की दिशा तय करने का एक सशक्त मंच बनेगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने विश्वास व्यक्त किया कि प्रधानमंत्री ने विकसित भारत@2047 के लिए जो संकल्प किया है, उसे पूरा करने में यह समिट हमारे सामूहिक उद्देश्य को हासिल करने में महत्वपूर्ण माध्यम बनेगी।

उन्होंने सभी से 'वोकल फॉर लोकल' के मंत्र के साथ स्वदेशी को प्राथमिकता देकर प्रधानमंत्री के विकसित भारत के संकल्प को पूर्ण करने का माध्यम बनने का भी अनुरोध किया।

इस अवसर पर अहमदाबाद की महापौर श्रीमती प्रतिभाबेन जैन ने कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में अहमदाबाद में 'नेशनल अर्बन कॉन्क्लेव' तथा 'मेयरल समिट' का आयोजन हो रहा है। यह सबके लिए गौरव एवं सम्मान की बात है। श्रीमती जैन ने जोड़ा कि अहमदाबाद शहर ने शहरी विकास के क्षेत्रों में अनेक उपलब्धियाँ हासिल की हैं। इतना ही नहीं; विरासत की परंपरा भी अहमदाबाद ने बनाए रखी है और साथ ही कूड़े से ऊर्जा एवं ऊर्जा से अवसर का संकल्प भी अहमदाबाद ने किया है।

उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के दूरदर्शी नेतृत्व में अहमदाबाद शहर ने साबरमती रिवरफ्रंट डेवलपमेंट, मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट इंटीग्रेशन (बीआरटीएस, एएमटीएस, मेट्रो), स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट्स, शहरी हरियाली, सांस्कृतिक एवं खेल-कूद की ढाँचागत सुविधाओं और विश्व स्तरीय नागरिक सुविधाओं जैसी माइलस्टोन समान पहलें की हैं। उन्होंने कहा कि इतना ही नहीं; इस समिट के माध्यम से भारत के शहरी परिदृश्य को एक करने, नवीनता लाने, नेतृत्व करने तथा परिवर्तन लाने के लिए लीडर्स को एक साथ लाने का प्रयास है।

आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय की अपर सचिव श्री डी. तारा ने इस कॉन्क्लेव में अपने संबोधन में कहा कि आगामी समय में सस्टेनेबल शहरी विकास के लिए नागरिकों को भी अपना सक्रिय योगदान देगा। हमारे शहरों की कूड़ा, ट्रैफिक, ग्लोबल वार्मिंग की चुनौतियाँ आदि समस्याओं के निवारण के लिए हम सभी को साथ मिलकर कार्य करना होगा। एक नागरिक के रूप में हमें यह सोचना चाहिए कि किस प्रकार हम छोटे-छोटे कदम उठाकर अपने घर से ही शहरी विकास में योगदान दें। हमें कूड़े की उचित निकासी, पानी की बचत, वृक्षारोपण, यातायात नियमों का पालन जैसे कर्तव्य जागरूकता के साथ निभाने होंगे।

उन्होंने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के अहमदाबाद नगरीय विकास प्राधिकरण (औडा) के अध्यक्ष के रूप में कार्यकाल में शहर के विकास के लिए मंजूर किए गए मास्टर प्लान का उल्लेख करते हुए कहा कि इस मास्टर प्लान एवं अफोर्डेबल हाउसिंग स्कीम के कारण आज अहमदाबाद में 10 प्रतिशत से अधिक स्लम क्षेत्र नहीं रहा है। उन्होंने आगामी समय में अर्बन रेजीलिएंट टाउन प्लानिंग की जरूरत पर भी बल दिया।

इस अवसर पर साबरमती रिवरफ्रंट डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एसआरएफडीसीएल) के अध्यक्ष श्री आई. पी. गौतम ने अपने विचार व अनुभव व्यक्त करते हुए कहा कि गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री तथा देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शहरी विकास को बहुत महत्व दिया, जिसके कारण आज गुजरात के सभी शहरों का विकास हो रहा है।

श्री गौतम ने जोड़ा कि श्री नरेन्द्र मोदी की शहरी विकास आधारित नीतियों के कारण आज गुजरात सहित अहमदाबाद को बहुत महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट मिले हैं, जिनकी आज केवल भारत देश में ही नहीं, अपितु समग्र विश्व में प्रशंसा हो रही है।

अहमदाबाद मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणि ने स्वागत संबोधन में देश के विभिन्न राज्यों से पधारे मेयर्स, शहरी विकास विभाग के पदाधिकारियों सहित सभी का स्वागत किया। उन्होने कहा कि अहमदाबाद में नेशनल अर्बन कॉन्क्लेव तथा मेयरल समिट का यह आयोजन गौरव का विषय है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में अहमदाबाद शहर को हेरिटेज सिटी तथा क्लीनेस्ट सिटी का दर्जा प्राप्त हुआ है।

श्री पाणि ने जोड़ा कि भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री व गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में उनकी दूरदर्शिता, प्रतिबद्धता तथा उनके जीवन मूल्यों से प्रेरणा लेते हुए आज इस राष्ट्रीय स्तर के कॉन्क्लेव एवं समिट का आयोजन किया गया है। देश के विभिन्न शहरों की बेस्ट प्रैक्टिसेज के आदान-प्रदान का यह अवसर है। इस कार्यक्रम में सुनियोजित शहरी विकास तथा शहरी विकास के भविष्य पर विचार-मंथन किया जाएगा। अर्बन प्लानिंग, सस्टेनेबिलिटी, इनक्लुजिविटी, टेक्नोलॉजी उपयोग जैसे विभिन्न बिंदुओं पर सकारात्मक मनोमंथन किया जाएगा। साथ ही; मनपा आयुक्त ने अहमदाबाद महानगर पालिका के अध्यक्ष के रूप में सरदार पटेल के कार्यकाल के विभिन्न महत्वपूर्ण निर्णयों तथा पहलों को इस अवसर पर याद किया।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य श्री सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में भारत के शहरी परिदृश्य को एक करने, नवीनता लाने, नेतृत्व करने तथा परिवर्तन लाने के लिए लीडर्स को एक साथ लाना है। इस समिट के दौरान भारतीय तथा अंतरराष्ट्रीय शहरों के मेयर्स, कमिशनर तथा प्रतिनिधि एक साथ मिलकर शहरों की भविष्य की योजनाओं पर विचार-विमर्श करेंगे।

इस कॉन्क्लेव के शुभारंभ अवसर पर देशभर के राज्यों के महानगरों के मेयर्स, कमिशनर, शहरी विभाग के विशेषज्ञ तथा प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

## रेल संरक्षा में उत्कृष्ट कार्य के लिए पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ने भावनगर मंडल के 2 कर्मचारियों को किया सम्मानित





रेल संरक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर उदाहरण प्रस्तुत करने वाले पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल के दो कर्मचारियों को पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता द्वारा "Man of the Month – सितंबर 2025" अवार्ड से सम्मानित किया गया।

यह सम्मान भावनगर मंडल के स्टेशन मास्टर (लींबडी स्टेशन) श्री राहुल शर्मा तथा इंजीनियरिंग गेटमैन (वढवाण सिटी, एल.सी. 116) श्री सुरेश कुमार को उनकी सतर्कता एवं तत्परता के लिए प्रदान किया गया। दोनों कर्मचारियों की सूझबूझ और त्वरित कार्रवाई से संभावित दुर्घटना को टाला जा सका।

सम्मान समारोह दिनांक 14 अक्टूबर 2025 (मंगलवार) को पश्चिम रेलवे मुख्यालय, चर्चगेट में आयोजित किया गया, जिसमें महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने दोनों कर्मचारियों को मेडल एवं योग्यता प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि दोनों कर्मचारियों ने कठिन परिस्थिति में भी अदम्य साहस और सजगता का परिचय दिया, जिससे रेल संरक्षा सुनिश्चित हो सकी।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने भी श्री राहुल शर्मा और श्री सुरेश कुमार को इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई दी तथा भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट कार्य करते रहने हेतु प्रोत्साहित किया।

पश्चिम रेलवे को ऐसे समर्पित एवं कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारियों पर गर्व है, जिन्होंने अपनी सतर्कता एवं शीघ्र कार्रवाई द्वारा किसी भी अप्रिय घटना की संभावना को समय रहते रोकने में सहायता की।

## "स्पेशल कैम्पेन 5 .0" के अंतर्गत भावनगर टर्मिनस स्टेशन पर "अमृत संवाद" कार्यक्रम का आयोजन



यात्रियों से संवाद एवं सुझावों के माध्यम से रेलवे सेवाओं को और अधिक जनोन्मुख व आधुनिक बनाने के उद्देश्य से "स्पेशल कैम्पेन 5.0" के अंतर्गत दिनांक 14 अक्टूबर 2025 (मंगलवार) को पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल के भावनगर टर्मिनस स्टेशन पर "अमृत संवाद" कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के दिशा-निर्देशों एवं नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन श्री विजय भट्ट, सहायक मंडल यांत्रिक इंजीनियर एवं स्टेशन प्रबंधक, भावनगर टर्मिनस द्वारा किया गया। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के पर्यवेक्षकगण भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान अधिकारियों ने यात्रियों से सीधे संवाद स्थापित कर स्टेशन पर उपलब्ध यात्री सुविधाओं में हुए सुधारों पर चर्चा की। यात्रियों ने "अमृत भारत स्टेशन योजना" के अंतर्गत किए गए विकास कार्यों — जैसे उन्नत प्रतीक्षालय, स्वच्छ शौचालय, पेयजल की समुचित व्यवस्था, दिव्यांगजनों हेतु विशेष सुविधाएं तथा "वन स्टेशन वन प्रोडक्ट" स्टॉल — की सराहना की।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि इस संवाद के दौरान यात्रियों से सुझाव भी प्राप्त किए गए, जिनमें स्टेशन पर हरित क्षेत्र बढ़ाने, डिजिटल सूचना प्रणाली को सुदृढ़ करने तथा स्थानीय परिवहन साधनों से बेहतर संपर्क की मांग प्रमुख रही।

अधिकारियों ने इस अवसर पर यात्रियों को स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण तथा जिम्मेदार नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक करते हुए रेलवे विकास में उनकी सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया।

यह "अमृत संवाद" कार्यक्रम यात्रियों की सहभागिता से रेलवे सेवाओं को और अधिक आधुनिक, सुरक्षित एवं जनोन्मुख बनाने की दिशा में एक सशक्त कदम सिद्ध हुआ।

# मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में 'गुजरात@75 : एजेंडा फॉर 2035' का अनावरण किया

**राज्य सरकार ने 2035 में गुजरात राज्य की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में अगले दशक के लिए विकास एजेंडा प्रस्तुत किया**

- **गुजरात सरकार के एजेंडा में 4 आई- इंफ्रास्ट्रक्चर, इनोवेशन, इंडिविजुअल्स और इंस्टीट्यूशन्स शामिल**
- **गुजरात@75 : 7500 स्कूलों में एआई-आधारित शिक्षा, 75 एडवांस्ड स्किल इंस्टीट्यूट की स्थापना और 75 लाख नौकरियां सृजित करने का लक्ष्य**
- **राज्य सरकार अगले एक दशक में 7.5 लाख करोड़ रुपए का निवेश कर सड़क, सिंचाई, बंदरगाह, परिवहन, जल और ऊर्जा आपूर्ति में इंफ्रास्ट्रक्चर को सुदृढ़ बनाएगी**



गांधीनगर : गुजरात राज्य वर्ष 2035 में अपनी स्थापना के ऐतिहासिक 75 वर्ष पूरे करने जा रहा है। ऐसे में, गुजरात सरकार ने राज्य के लिए अगले एक दशक में विकास की रूपरेखा निर्धारित करने के लिए 'गुजरात@75 : एजेंडा फॉर 2035' दस्तावेज का अनावरण किया

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बुधवार को गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में इस दस्तावेज का अनावरण किया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि यह मील का पत्थर गुजरात की उपलब्धियों का जश्न मनाने के साथ ही भविष्य के लिए राज्य की प्रतिबद्धता को भी व्यक्त करता है, जो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए 'विकसित भारत@2047' के विजन के अनुरूप है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह एजेंडा आगामी दशक में गुजरात के प्रत्येक व्यक्ति के लिए 'अर्निंग वेल, लिविंग वेल' यानी 'बेहतर कमाई, बेहतर जीवन' का लक्ष्य हासिल करने की दिशा में सरकार के प्रयासों की समीक्षा करेगा।

**'समृद्ध राज्य, समर्थ नागरिक' के सूत्र को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है गुजरात सरकार**

'एजेंडा फॉर 2035' दस्तावेज में गुजरात की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर राज्य के लक्ष्यों और उसे हासिल करने के लिए बनाई गई रणनीतियों का उल्लेख किया गया है। इसका उद्देश्य राज्य में स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल, उद्यमिता, बुनियादी ढांचा विकास और पर्यावरणीय स्थिरता आदि क्षेत्रों को गति देना और राज्य के सभी जिलों में संतुलित एवं समावेशी विकास सुनिश्चित करना है। यह सरकार की 'समृद्ध राज्य, समर्थ नागरिक' सूत्र को साकार करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

**गुजरात@75 : 7500 स्कूलों में एआई-आधारित शिक्षा, 75 एडवांस्ड स्किल इंस्टीट्यूट की स्थापना और 75 लाख नौकरियां सृजित करने का लक्ष्य**

राज्य के शिक्षित और कुशल युवा गुजरात के विकास का मुख्य स्तंभ हैं, इसलिए राज्य उन्हें सशक्त करने पर बल देगा। वर्ष 2035 तक गुजरात के प्रत्येक बच्चे को आधुनिक और भविष्य-उन्मुख शिक्षा की सुविधा मिलेगी। 7500 स्कूलों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई-आधारित शिक्षा शुरू की जाएगी और 75 एडवांस्ड स्किल इंस्टीट्यूट स्थापित किए जाएंगे, जिससे 75 लाख नौकरियां सृजित होंगी।

राज्य का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करना, मेडिकल कॉलेजों की संख्या बढ़ाना, एक व्यापक डिजिटल स्वास्थ्य नेटवर्क स्थापित करना और प्रत्येक परिवार के लिए स्वास्थ्य बीमा कवरेज सुनिश्चित करना है। ये कदम गुजरात के स्वास्थ्य क्षेत्र को सुदृढ़ बनाने में अहम भूमिका निभाएंगे।

**स्वच्छ ऊर्जा और हरित भविष्य को बढ़ावा देने का लक्ष्य**

गुजरात स्वच्छ ऊर्जा और हरित भविष्य को प्रोत्साहन देने के लिए प्रतिबद्ध है। गुजरात अगले 10 वर्षों में 750 स्थानों को हरित बनाकर उन्हें अर्बन लंग्स के रूप में विकसित करेगा। राज्य में 7500 मियावाकी जंगल बनाए जाएंगे, 75 फीसदी म्युनिसिपल अपशिष्ट जल को रिसाइकिल किया जाएगा और 75 आइकॉनिक इमारतों का निर्माण भी किया जाएगा। डिजिटल गवर्नेंस और ई-सेवाएं हर नागरिक को सशक्त बनाएंगी।

समृद्ध किसान और ग्रामीण विकास : फसल की गुणवत्ता में सुधार, मूल्यवर्धन और कृषि-प्रसंस्करण के माध्यम से किसानों की आय बढ़ेगी, जो ग्रामीण समृद्धि को गति देगी।

गुजरात का लक्ष्य ग्रीन एनर्जी और नेट जीरो लक्ष्य को हासिल करने में अग्रणी राज्य बनना है। राज्य का लक्ष्य अगले दशक में ग्रीन एनर्जी संचालित करना है, जिसमें हाइड्रोजन प्लांट, 75 गीगावाट पवन ऊर्जा, 7500 इलेक्ट्रिक बसें और सौर ऊर्जा के व्यापक उपयोग पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। यह न केवल टिकाऊ विकास को प्रोत्साहन देगा, बल्कि हजारों रोजगार का सृजन भी करेगा।

गुजरात नवाचार और उद्यमिता केंद्र के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करेगा : गुजरात 2035 तक नवाचार और उद्यमिता के नए आयाम स्थापित कर, स्टार्टअप्स और उद्यमों को बढ़ावा देकर भारत का इनोवेशन पावरहाउस बनेगा।

मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर से राज्य नई बुलंदियों को छुएगा : गुजरात 7.5 लाख करोड़ रुपए के निवेश के साथ सड़क, सिंचाई, बंदरगाह, परिवहन, जल और ऊर्जा आपूर्ति में इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत बनाएगा।

**4 आई- इंफ्रास्ट्रक्चर, इनोवेशन, इंडिविजुअल्स और इंस्टीट्यूशन्स**

गुजरात की यह योजना- '4 आई' यानी इंफ्रास्ट्रक्चर (बुनियादी ढांचा), इनोवेशन (नवाचार), इंडिविजुअल्स (व्यक्तियों) और इंस्टीट्यूशन्स (संस्थानों) पर ध्यान केंद्रित करती है। 2035 के लिए एजेंडा अगले एक दशक में नीतियों और उनके क्रियान्वयन के लिए स्पष्ट एवं परिणामोन्मुखी मार्गदर्शन प्रदान करता है।

गुजरात सरकार के लिए यह दस्तावेज गुजरात राज्य इंस्टीट्यूशन फॉर ट्रांसफॉर्मेशन (जीआरआईटी-ग्रिट) की ओर से तैयार किया गया है, जिसमें गुजरात सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट सोसाइटी (जीएसआईडीएस), गुजरात इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट बोर्ड (जीआईडीबी), गुजरात स्टूडेंट स्टार्टअप एंड इनोवेशन हब (आई-हब), उच्च शिक्षा विभाग और योजना तथा प्रशासनिक सुधार एवं प्रशिक्षण प्रभाग (एआरटीडी) जैसे सरकारी विभाग, संस्थानों और बोर्ड की सक्रिय भागीदारी है।

'गुजरात@75 : एजेंडा फॉर 2035' का अनावरण 2047 तक गुजरात को विकसित राज्य बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर है। यह भारत में विकास और नवाचार को आगे बढ़ाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाएगा।

## 'अभी बुक करें...' विज्ञापन से मची अफरा-तफरी, चांदी खरीदने उमड़ी भीड़, ज्वैलर्स ने कहा — ऐसा कोई ऑफर नहीं





अहमदाबाद। दिवाली का त्योहार नजदीक है और बाजारों में सोना-चांदी की खरीदारी जोरों पर है। लेकिन इसी बीच गुजरात के अहमदाबाद में एक ऐसा अजीबो-गरीब मामला सामने आया जिसने पूरे शहर में हड़कंप मचा दिया। हुआ यूं कि अखबारों में एक ज्वैलरी शोरूम का विज्ञापन छपा — "चांदी मात्र 1.63 लाख प्रति ग्राम (जीएसटी सहित) में उपलब्ध, अभी बुक करें"। यह लाइन देखते ही लोगों में अफरा-तफरी मच गई। सुबह से ही दुकान के बाहर सैकड़ों की भीड़ जमा हो गई और हर कोई उसी ऑफर में चांदी खरीदने की चाह लेकर पहुंच गया।

मामला अहमदाबाद के प्रसिद्ध कलामंदिर ज्वैलर्स का है। जैसे ही दुकान खुली, ग्राहक बुकिंग स्लिप और रुपये लेकर अंदर घुसने लगे। कुछ ने तो एडवांस देने की तैयारी भी कर ली। लेकिन जब काउंटर पर मौजूद कर्मचारियों ने कहा कि "ऐसा कोई ऑफर नहीं है", तो लोगों ने हंगामा खड़ा कर दिया। गुस्साए ग्राहकों ने आरोप लगाया कि ज्वैलर्स ने झूठा विज्ञापन देकर जनता को गुमराह किया है।

स्थिति बिगड़ते देख ज्वैलर्स के मैनेजर परेश रावल ने तुरंत पुलिस को बुलाया। पुलिस मौके पर पहुंची और किसी तरह भीड़ को शांत कराया। बाद में दोनों पक्षों के बीच बातचीत कर मामला थाने में सुलझाया गया। पुलिस ने बताया कि यह पूरा विवाद "गलतफहमी" के कारण हुआ था।

दरअसल, ज्वैलर्स का विज्ञापन एमसीएक्स (मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज) की ऑनलाइन ट्रेडिंग दरों पर आधारित था। इसमें लिखा था — "बुक करें, बाद में डिलीवरी पाएं।" लेकिन अधिकांश लोगों ने यह समझा कि दुकान में तत्काल इतनी सस्ती चांदी मिल रही है। जबकि असल में 1.63 लाख प्रति किलोग्राम का भाव था, न कि प्रति ग्राम। लेकिन विज्ञापन में 'ग्राम' शब्द छप जाने से भ्रम फैल गया।

परेश रावल ने बताया, "हमारे विज्ञापन में तकनीकी गलती हुई थी। दरअसल, यह ऑफर ऑनलाइन बुकिंग के लिए था, न कि दुकान से त्वरित खरीदारी के लिए। लोग गलतफहमी में आ गए और बड़ी संख्या में आकर चांदी मांगने लगे।"

भीड़ के बीच कई लोग ऐसे भी थे जिन्होंने कहा कि उन्होंने यह खबर सोशल मीडिया पर वायरल होते देखी थी — किसी ने स्क्रीनशॉट डाल दिया था कि 'कलामंदिर में 1.63 लाख में चांदी मिल रही है।' उसके बाद तो जैसे आग फैल गई।

बढ़ती कीमतों के बीच चांदी की डिमांड इस समय रिकॉर्ड स्तर पर है। वैश्विक बाजारों में चांदी की कीमतें लगातार चढ़ रही हैं, और इस वजह से निवेशक सोने के मुकाबले अब चांदी में अधिक रुचि दिखा रहे हैं। एमसीएक्स पर चांदी की कीमतें पिछले एक महीने में करीब 12 प्रतिशत बढ़ चुकी हैं। छोटे शहरों में कई ज्वैलर्स ने तो भारी मांग के चलते नए ऑर्डर लेना भी बंद कर दिया है।

विशेषज्ञों का कहना है कि "लोग अब चांदी को निवेश और पूजा दोनों दृष्टिकोण से शुभ मान रहे हैं।" इस दीवाली चांदी की दीवानगी ऐसी है कि कई लोग सोने के बजाय 'चांदी के सिक्के, बार और बिस्कुट' खरीदने में जुटे हैं।

अहमदाबाद का यह वाकया अब सोशल मीडिया पर मज़ाक और सीख — दोनों बन गया है। कोई कह रहा है "विज्ञापन ध्यान से पढ़ो, वरना दुकान पहुंच जाओगे", तो कोई मजाक में लिख रहा है "1.63 लाख प्रति ग्राम में चांदी नहीं, शायद चांदी का ग्रह खरीदा जा सकता है।"

कुल मिलाकर, यह घटना दिखाती है कि त्योहारों के मौसम में जहां लोग लाभ के अवसर ढूंढते हैं, वहीं एक छोटी सी 'मुद्रण त्रुटि' भी बड़े विवाद और अफरा-तफरी में बदल सकती है।

## पश्चिम रेलवे वलसाड एवं हिसार के बीच चलाएगी साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन



पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा दिवाली एवं छठ पूजा के त्योहारी सीज़न के दौरान उनकी यात्रा मांग को पूरा करने के उद्देश्य से वलसाड एवं हिसार स्टेशनों के बीच विशेष किराए पर एक स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी।

पश्चिम रेलवे के जनसंपर्क विभाग द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण इस प्रकार है:

1. ट्रेन संख्या 04728/04727 वलसाड-हिसार साप्ताहिक स्पेशल [08 फेरे]

ट्रेन संख्या 04728 वलसाड-हिसार स्पेशल प्रत्येक गुरुवार को वलसाड से 14:50 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 14:05 बजे हिसार पहुँचेगी। यह ट्रेन 16 अक्टूबर से 06 नवंबर, 2025 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 04727 हिसार-वलसाड स्पेशल प्रत्येक बुधवार को हिसार से 12:05 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 11.30 बजे वलसाड पहुँचेगी। यह ट्रेन 15 अक्टूबर से 05 नवंबर 2025 तक चलेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में नवसारी, सूरत, भरूच, वडोदरा, गोधरा, दाहोद, रतलाम, मंदसौर, नीमच, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बिजयनगर, नसीराबाद, अजमेर, किशनगढ़, फुलेरा, रींगस, नीम का थाना, नारनौल, रेवाड़ी, चरखी दादरी, भिवानी और हांसी स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में फर्स्ट एसी, एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास और जनरल सेकेंड क्लास कोच होंगे।

ट्रेन संख्या 04728 की बुकिंग सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू है। ट्रेनों के ठहराव, संरचना और समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

## पश्चिम रेलवे चलायेगी साबरमती-गोरखपुर और साबरमती-बेगूसराय के बीच अनारक्षित फेस्टिवल स्पेशल ट्रेनें

पश्चिम रेलवे द्वारा आगमी दिवाली और छठ पूजा त्योहारों के मद्देनजर यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए साबरमती-गोरखपुर और साबरमती-बेगूसराय के बीच अनारक्षित स्पेशल ट्रेनें विशेष किराये पर चलाने का निर्णय लिया गया है। इन स्पेशल ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

**ट्रेन संख्या 09429/09430 साबरमती-गोरखपुर त्रि-साप्ताहिक अनारक्षित स्पेशल ट्रेन विशेष किराए पर (12 फेरे)**

ट्रेन संख्या 09429 साबरमती-गोरखपुर त्रि-साप्ताहिक अनारक्षित स्पेशल साबरमती से 16 अक्टूबर 2025 से 26 अक्टूबर 2025 तक प्रति गुरुवार, शुक्रवार और रविवार को सुबह 08:50 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन सुबह 10:00 बजे गोरखपुर पहुचेंगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 09430 गोरखपुर-साबरमती त्रि-साप्ताहिक अनारक्षित स्पेशल गोरखपुर से 17 अक्टूबर 2025 से 27 अक्टूबर 2025 तक प्रति शुक्रवार, शनिवार और सोमवार को दोपहर 13:00 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन दोपहर 15:30 बजे साबरमती पहुचेंगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन महेसाणा, पालनपुर, आबूरोड, मारवाड़ जं., अजमेर, जयपुर, गांधी नगर जयपुर, दौसा, बाँदीकुई जं., भरतपुर, ईदगाह आगरा, टुंडला, इटावा, गोविंदपुरी, उन्नाव, लखनऊ, बाराबंकी, गोंडा, मनकापुर एवं बस्ती स्टेशनों पर रुकेगी।



इस ट्रेन में सभी अनारक्षित श्रेणी के कोच रहेंगे।

**ट्रेन संख्या 09431/09432 साबरमती-बेगूसराय अनारक्षित स्पेशल ट्रेन विशेष किराए पर (28 फेरे)**

ट्रेन संख्या 09431 साबरमती-बेगूसराय अनारक्षित स्पेशल साबरमती से 14 अक्टूबर 2025 से 27 अक्टूबर 2025 तक प्रतिदिन दोपहर 12:05 बजे प्रस्थान करेगी तथा तीसरे दिन सुबह 08:00 बजे बेगूसराय पहुचेंगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 09432 बेगूसराय-साबरमती अनारक्षित स्पेशल बेगूसराय से 16 अक्टूबर 2025 से 29 अक्टूबर 2025 तक प्रतिदिन दोपहर 12:00 बजे प्रस्थान करेगी तथा तीसरे दिन सुबह 05:00 बजे साबरमती पहुचेंगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन महेसाणा, पालनपुर, आबूरोड, फालना, मारवाड़ जं.,ब्यावर, अजमेर, किशनगढ़, जयपुर, दौसा, बाँदीकुई जं., भरतपुर, ईदगाह आगरा, टुंडला, इटावा, गोविंदपुरी, सुबेदारगंज, मिर्ज़ापुर, पं. दीन दयाल उपाध्याय जं., बक्सर, आरा, दानापुर, पाटलिपुत्र जं., सोनपुर, हाजीपुर एवं बरौनी जं. स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में सभी अनारक्षित श्रेणी के कोच रहेंगे।

ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

विकास सप्ताह-2025 का सफलतापूर्वक आयोजन संपन्न

# मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने विकास सप्ताह के समापन अवसर पर एक साथ, एक ही दिन में 2885 करोड़ रुपए के विकास कार्यों की सौगात दी

**▸▸ विकास सप्ताह-2025 में राज्य को लगभग 5 हजार करोड़ रुपए के विकास कार्यों की भेंट मिली**

**▸▸ श्री नरेन्द्र मोदी पर गुजरात के लोगों का 2001 से बना हुआ भरोसा, आज 140 करोड़ देशवासियों का विश्वास बन गया है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल**

**▸▸ "प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गुजरात के विश्वस्तरीय विकास के लिए दिए गए मार्गदर्शन, योगदान और अथक प्रयास, विकास सप्ताह के जरिए सभी को विकास की नई दिशा में लगातार आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं"**

**▸▸ मुख्यमंत्री ने 'गुजरात@75' के लोगो का अनावरण और 'गुजरात@75 : एजेंडा फॉर 2035 अ डिकेड ऑफ एक्सीलरेशन टूवर्ड्स विकसित गुजरात@2047' पुस्तक का विमोचन किया**

### मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

**▸▸** गुजरात 2035 में अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूरे करेगा, ऐसे में इस वर्ष का विकास सप्ताह पूरे राज्य के लिए मार्गदर्शक प्लेटफॉर्म बना है

**▸▸** विकास सप्ताह की सफलता ने यह विश्वास जगाया है कि गुजरात दूसरे अभियानों की तरह विकसित भारत के निर्माण में भी नेतृत्व करने को तैयार है

**▸▸** गुजरात में स्वदेशी वस्तुओं को बढ़ावा देकर तथा वोकल फॉर लोकल, लोकल फॉर ग्लोबल का मंत्र अपनाकर आत्मनिर्भर भारत का संकल्प साकार करेंगे

### विकास सप्ताह के दौरान हुए प्रमुख कार्य :-

**▸▸** 658 भर्ती मेलों के जरिए 55 हजार से अधिक युवाओं को निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर

**▸▸** 5.30 लाख लाभार्थी किसानों को 600 करोड़ रुपए से अधिक की सहायता वितरित

**▸▸** यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के मार्गदर्शन के लिए 10 आईएएस कोचिंग सेंटर शुरू

**▸▸** जिला स्तरीय कार्यक्रमों में 1535 करोड़ रुपए के 22 हजार से अधिक विकास कार्यों की भेंट दी गई

**▸▸** विभिन्न कल्याण योजनाओं के लाभ प्राप्त करने वाले लोगों ने 1 करोड़ से अधिक पोस्ट कार्ड लिखकर आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति आभार व्यक्त करने का रिकॉर्ड बनाया

**▸▸** आवास योजना के लाभार्थियों को नए आवास की चाबी सौंपी

**▸▸ भारत रत्न, पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम जी की जयंती पर मुख्यमंत्री ने उन्हें भावपूर्वक वंदन किया**

मुख्यमंत्री ने शहरी विकास और शहरी गृह निर्माण विभाग की 2079 करोड़ रुपए की 299 परियोजनाओं, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की 252 करोड़ रुपए की 64 परियोजनाओं, प्राथमिक शिक्षा विभाग की 138 करोड़ रुपए की 88 परियोजनाओं, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की 84 करोड़ रुपए की 4 परियोजनाओं, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की 83 करोड़ रुपए की 8 परियोजनाओं तथा श्रम एवं रोजगार विभाग की 60 करोड़ रुपए की 5 परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया।

इसके अलावा, मुख्यमंत्री एवं महानुभावों ने गृह विभाग की 43 करोड़ रुपए की 7 परियोजनाओं, कृषि विभाग की 40 करोड़ रुपए की 2 परियोजनाओं, उद्योग और खान विभाग की 34 करोड़ रुपए की 4 परियोजनाओं, तकनीकी शिक्षा की 31 करोड़ रुपए की 2 परियोजनाओं, बंदरगाह और परिवहन विभाग की 23 करोड़ रुपए की 4 परियोजनाओं तथा पर्यटन विभाग की 21 करोड़ रुपए की 2 परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया।

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य में 7 से 15 अक्टूबर के दौरान मनाए गए विकास सप्ताह के समापन अवसर पर बुधवार को गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर से राज्य के नागरिकों को शहरी विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहित12 विभागों के 2885 करोड़ रुपए के 488 विकास कार्यों की भेंट दी। इस अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 24 वर्षों के सफल सुशासन के जश्न के भाग के रूप में हर साल 7 से 15 अक्टूबर के दौरान गुजरात में विकास सप्ताह मनाया जाता है। इस वर्ष के विकास सप्ताह के दौरान राज्य के नागरिकों की सेवा में 5000 करोड़ रुपए के विकास कार्य समर्पित किए गए हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस अवसर पर कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी पर गुजरात के लोगों का 2001 से बना हुआ भरोसा, आज 140 करोड़ देशवासियों का विश्वास बन गया है। श्री नरेन्द्र मोदी ने अनेक चुनौतियों के बीच गुजरात को 2001 के भूकंप की तबाही से उबारा था और उनके विजन एवं मार्गदर्शन से गुजरात आज देश का ग्रोथ इंजन बन गया है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गुजरात के विश्वस्तरीय विकास के लिए दिए गए मार्गदर्शन, योगदान और अथक प्रयास विकास सप्ताह के माध्यम से सभी को विकास की नई दिशा में लगातार आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहे हैं। मुख्यमंत्री ने पूर्व राष्ट्रपति और भारत रत्न डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की जयंती के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी के विजन से शुरू हुई ज्योतिग्राम योजना, जिसने गुजरात के गांवों में उजियारा फैलाया था, डॉ. कलाम के करकमलों द्वारा राष्ट्र को समर्पित की गई थी

ज्योतिग्राम, मुख्यमंत्री अमृतम्, ई-ग्राम, खेल महाकुंभ और कृषि महोत्सव जैसी योजनाओं का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि ये योजनाएं गुजरात से शुरू होकर अब देशभर में लागू हो चुकी हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विकास सप्ताह के दौरान राज्य सरकार ने 'जीवाईएएन-ज्ञान शक्ति' यानी गरीब, युवा, अन्नदाता किसान और नारी शक्ति के सशक्तिकरण को और अधिक मजबूत एवं सशक्त करने का काम किया है।

उन्होंने कहा कि 658 भर्ती मेलों के माध्यम से 55,000 से अधिक युवाओं को निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्रदान किए गए हैं। गुजरात की यूनिवर्सिटियों और कॉलेजों में यूपीएससी सिविल सेवा सहित अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए मार्गदर्शन देने के लिए 10 आईएएस कोचिंग सेंटर शुरू किए गए हैं।

इसके अलावा, मुख्यमंत्री ने कहा कि रबी कृषि महोत्सव आदि में 5.30 लाख लाभार्थी किसानों को 600 करोड़ रुपए से अधिक की सहायता का वितरण किया गया है। साथ ही, जिला स्तरीय कार्यक्रमों में 1535 करोड़ रुपए से अधिक के कार्यों की भेंट नागरिकों को मिली है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गुजरात वर्ष 2035 में अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूरे करने जा रहा है, तब इस वर्ष का विकास सप्ताह समग्र राज्य के लिए एक मार्गदर्शक प्लेटफॉर्म बनेगा। 'एजेंडा फॉर 2035' विकसित गुजरात 2047 के विजन को साकार करने का फ्रेमवर्क प्रदान करेगा। अगले दशक में 'समृद्ध राज्य, समर्थ नागरिक' के लक्ष्य को साकार करने में यह एजेंडा 'होल ऑफ गवर्नमेंट' एप्रोच यानी 'संपूर्ण सरकार' दृष्टिकोण के साथ अहम भूमिका निभाएगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए 'विकसित भारत@2047' के संकल्प को साकार करने के लिए स्वदेशी वस्तुओं को बढ़ावा देकर तथा वोकल फॉर लोकल, लोकल फॉर ग्लोबल का मंत्र अपनाकर आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य हासिल करने को कहा। उन्होंने आगामी दिवाली और नववर्ष के त्योहारों में स्वदेशी वस्तुओं की खरीदी को ही बढ़ावा देने का आह्वान किया।

समारोह के दौरान मुख्यमंत्री ने राज्य के शहरी आवास योजना के लाभार्थियों को उनके नए आवास की चाबी सौंपी। इसके अलावा, मुख्यमंत्री ने 'गुजरात@75' के लोगो का अनावरण और 'गुजरात@75 : एजेंडा फॉर 2035 अ डिकेड ऑफ एक्सीलरेशन टूवर्ड्स विकसित गुजरात@2047' पुस्तक का विमोचन किया।

स्वास्थ्य मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल ने सभी उपस्थितों का कार्यक्रम में स्वागत करते हुए कहा कि आज गुजरात प्रगति का पर्याय बन गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2001 से शुरू हुई गुजरात की विकास यात्रा आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंच गई है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मजबूत नेतृत्व में विकसित गुजरात से विकसित भारत का संकल्प साकार होगा।

उन्होंने कहा कि गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 13 वर्षों के नेतृत्व में गुजरात को राष्ट्रीय स्तर पर रोल मॉडल बनाया है। प्रधानमंत्री गुजरात में मुख्यमंत्री के रूप में शुरू किए गए अभियानों, योजनाओं और नए प्रकल्पों को राष्ट्रीय स्तर पर लागू कर विकसित भारत का संकल्प साकार कर रहे हैं। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में जनहितकारी सेवाएं राज्य के जन-जन तक पहुंच रही हैं। विकास सप्ताह के समापन अवसर पर उन्होंने सभी नागरिकों से अपील की कि वे स्वदेशी को अपना स्वभाव और स्वाभिमान बनाएं और त्योहारों में स्वदेशी वस्तुओं की ही खरीदारी करें।

कार्यक्रम में गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, अहमदाबाद की महापौर श्रीमती प्रतिभा जैन, गांधीनगर जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती शिल्पाबेन पटेल, विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल, श्री अल्पेशभाई ठाकोर, मुख्य सचिव श्री पंकज जोशी, मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव श्री एम.के. दास, अपर मुख्य सचिव श्रीमती सुनयना तोमर, श्री एस.जे. हैदर और डॉ. जयंती रवि सहित राज्य सरकार के वरिष्ठ सचिव, विभिन्न पदाधिकारी, उच्च अधिकारी और बड़ी संख्या में नागरिक और लाभार्थी उपस्थित रहे।

# कॉमनवेल्थ स्पोर्ट एग्जीक्यूटिव बोर्ड ने वर्ष 2030 के कॉमनवेल्थ खेलों का आयोजन भारत में करने की सिफारिश की

**▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के खेल संस्कृति को निरंतर बढ़ावा देने और दूरदर्शिता के एक भाग के रूप में बोर्ड ने 24वें कॉमनवेल्थ गेम्स और इसके शताब्दी समारोह की मेजबानी के लिए अहमदाबाद को दिया समर्थन**

**▸▸ बोर्ड की सिफारिश नवंबर-2025 में आयोजित होने वाली कॉमनवेल्थ स्पोर्ट की महासभा के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी**

गांधीनगर : भारत के खेल क्षेत्र के विकास को गति देने की दिशा में आज एक ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण घोषणा की गई है। कॉमनवेल्थ स्पोर्ट एग्जीक्यूटिव बोर्ड ने वर्ष-2030 में आयोजित होने वाले 24वें कॉमनवेल्थ गेम्स का आयोजन भारत में करने की सिफारिश की है। साथ ही, बोर्ड ने यह भी सिफारिश की है कि इन खेलों की मेजबानी गुजरात के अहमदाबाद को दी जाए। इस बात की पूरी संभावना है कि 1930 में शुरू हुए कॉमनवेल्थ गेम्स का शताब्दी समारोह अहमदाबाद में आयोजित होगा। बोर्ड की इस सिफारिश को अब नवंबर-2025 में आयोजित होने वाली कॉमनवेल्थ स्पोर्ट की महासभा के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

भारत में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए 'खेलो इंडिया' के माध्यम से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की खोज और उनकी प्रतिभा को तराशने के लिए निरंतर प्रयासरत देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के लगातार मार्गदर्शन के कारण देश में 24वें कॉमनवेल्थ गेम्स के आयोजन के लिए यह सिफारिश की गई है।

माननीय केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह और राज्य के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के अथक प्रयासों के कारण भारत खेल क्षेत्र में लगातार आगे बढ़ रहा है। इसके कारण कॉमनवेल्थ गेम्स के शताब्दी वर्ष के अंतर्गत अहमदाबाद को 24वें कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी मिलने की संभावनाएं उज्ज्वल हो गई हैं। इस क्षण का स्वागत करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने देश के सभी नागरिकों को बधाई देते हुए कहा कि इसका श्रेय मोदी जी के निरंतर प्रयासों को जाता है। खेलों से संबद्ध मजबूत बुनियादी ढांचे और खिलाड़ियों को तैयार कर उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर के समकक्ष लाने के कारण ही भारत को यह सम्मान मिलने जा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा, "यह गुजरात और भारत के लिए वास्तव में गर्व का क्षण है।" उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शिता की प्रशंसा की और कॉमनवेल्थ गेम्स के लिए अहमदाबाद के चयन के एग्जीक्यूटिव बोर्ड ऑफ कॉमनवेल्थ स्पोर्ट्स के निर्णय का स्वागत किया।

गौरतलब है कि 2030 का कॉमनवेल्थ गेम्स केवल एक खेल प्रतियोगिता ही नहीं, बल्कि एक अंतरराष्ट्रीय खेल उत्सव के 100 वर्षों के सफर का जश्न भी होगा। ये खेल कॉमनवेल्थ के 74 देशों के बीच एक शताब्दी से चली आ रही खेल भावना और सहयोग का प्रतीक होंगे, और गुजरात का अहमदाबाद शहर इस इतिहास का गवाह बनने को तैयार है। कॉमनवेल्थ गेम्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया की अध्यक्ष डॉ. पी.टी. उषा ने 100वें कॉमनवेल्थ गेम्स को 'गेम्स फॉर द फ्यूचर' बताते हुए कहा कि अहमदाबाद के कॉमनवेल्थ गेम्स-स्थिरता, समावेशिता और नवीनता पर आधारित होंगे, जो कॉमनवेल्थ स्पोर्ट की अगली सदी की नींव को और भी मजबूत बनाएंगे तथा इसके सकारात्मक प्रभाव आने वाले कई वर्षों तक भारत के बाहर भी देखने को मिलेंगे। इस संदर्भ में केंद्रीय खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने कहा कि अहमदाबाद में 2030 के कॉमनवेल्थ गेम्स प्रत्येक भारतीय के लिए गौरव का क्षण होंगे। यह खेल क्षेत्र में भारत के बढ़ते नेतृत्व और भारत सरकार के इस विश्वास को दर्शाता है कि खेल लोगों को एकजुट कर सकते हैं, समावेशिता को बढ़ावा दे सकते हैं और नई पीढ़ी को प्रेरणा दे सकते हैं। भारत की यह सफलता 'विकसित भारत@2047' के राष्ट्रीय विजन को मजबूत करेगी, जहां विश्वस्तरीय खेल, बुनियादी ढांचा और युवा विकास हमारे देश की विकास गाथा के साथ जुड़े हुए हैं। गुजरात के खेल मंत्री श्री हर्ष संघवी ने इस अवसर को भारत और गुजरात के लिए गौरव का क्षण करार देते हुए कहा कि अहमदाबाद में आयोजित होने वाले 100वें कॉमनवेल्थ गेम्स केवल एक वैश्विक स्पोर्ट्स इवेंट की मेजबानी भर नहीं है, बल्कि ये पूरी दुनिया के समक्ष 'आत्मविश्वासी, समर्थ, भविष्य-उन्मुख एवं नए भारत' को प्रस्तुत करने का एक सुनहरा अवसर भी होगा। गुजरात सरकार कॉमनवेल्थ के 100 वर्षों की विरासत का सम्मान करते हुए कॉमनवेल्थ स्पोर्ट की अगली सदी के लिए मार्ग प्रशस्त करने को पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

कॉमनवेल्थ स्पोर्ट के 'गेम्स रीसेट' के सिद्धांत- सामर्थ्य, समावेशिता, स्थिरता और विरासत को बढ़ावा देने वाले भारत सरकार, गुजरात सरकार और कॉमनवेल्थ गेम्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत किए गए आयोजन के प्रस्ताव की बोर्ड में जोरदार प्रशंसा की गई।

वर्ष 2030 के कॉमनवेल्थ गेम्स भारत की वैश्विक खेलों का केंद्र बनने की दीर्घकालिक महत्वाकांक्षा को और अधिक मजबूत करेंगे। यह वैश्विक इवेंट शहरी नवीनीकरण, युवाओं की भागीदारी और खेल में अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करेंगे।

# अहमदाबाद मंडल के आंबलियासन–विजापुर रेलखंड का गेज परिवर्तन कार्य पूर्ण

**▸▸ 42.32 किमी लंबा खंड अब ब्रॉड गेज में परिवर्तित,**

**▸▸ 16 एवं 17 अक्टूबर 2025 को होगा संरक्षा निरीक्षण**

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के आंबलियासन–विजापुर रेलखंड (42.32 किमी) का गेज परिवर्तन कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है। अब यह खंड मीटर गेज से ब्रॉड गेज में परिवर्तित होकर यात्रियों के लिए आधुनिक और सुरक्षित परिचालन के लिए तैयार है। इस खंड का संरक्षा निरीक्षण (Safety Inspection) रेल संरक्षा आयुक्त (CRS), पश्चिम रेलवे द्वारा 16 एवं 17 अक्टूबर 2025 को किया जाएगा, जिसमें 16 एवं 17 अक्टूबर को मोटर ट्रॉली निरीक्षण तथा 17 अक्टूबर को इंजन स्पीड ट्रायल 120 किमी/घंटा की गति से किया जाएगा।

इस परियोजना को वर्ष 2022-23 में स्वीकृति प्राप्त हुई थी। यह परियोजना को 16 मई 2022 को 415.37 करोड़ की अनुमानित लागत से मंजूरी दी गई थी। इस खंड में 02 मेजर ब्रिज, 51 माइनर ब्रिज और 45 नए रोड अंडर ब्रिज (RUBs) का निर्माण किया गया है। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए रेलवे लाइन को लेवल क्रॉसिंग के समीप फेंसिंग द्वारा सुरक्षित किया गया है और इस मार्ग पर कुल 04 लेवल क्रॉसिंग्स हैं।

इस ब्रॉड गेज लाइन में 60 किग्रा के नए रेल पैनल बिछाए गए हैं। आंबलियासन और विजापुर स्टेशनों को स्टैंडर्ड-II इंटरलॉकिंग सिस्टम और मल्टीपल एस्पेक्ट कलर लाइट सिग्नलिंग (MACLS) के साथ आधुनिक सुरक्षा उपायों से सुसज्जित किया गया है, जिससे ट्रेनों के संचालन की सुरक्षा और दक्षता में उल्लेखनीय सुधार होगा। इस नए ब्रॉड गेज के माध्यम से यात्रियों को अब देश के प्रमुख रेलवे स्टेशनों और बड़े शहरों से प्रत्यक्ष कनेक्टिविटी मिलेगी, जिससे यात्रा अधिक सुविधाजनक, तेज़ और सुगम होगी।

इस गेज परिवर्तन परियोजना से यात्रियों को अब तेज़, सुरक्षित और आरामदायक रेल यात्रा उपलब्ध होगी। इस मार्ग से उत्तरी गुजरात के ग्रामीण एवं औद्योगिक क्षेत्रों में बेहतर रेल कनेक्टिविटी सुनिश्चित होगी, जिससे यात्रियों का यात्रा समय कम होगा और सुविधा में सुधार होगा। साथ ही, क्षेत्रीय व्यापार और कृषि को भी बढ़ावा मिलेगा, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। इस परियोजना के निर्माण और संचालन के माध्यम से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे और समग्र क्षेत्र का सामाजिक और आर्थिक विकास भी होगा। नए ब्रॉड गेज कनेक्शन से भविष्य में नई यात्री और मालगाड़ियों के परिचालन की संभावनाएँ भी बढ़ेंगी।

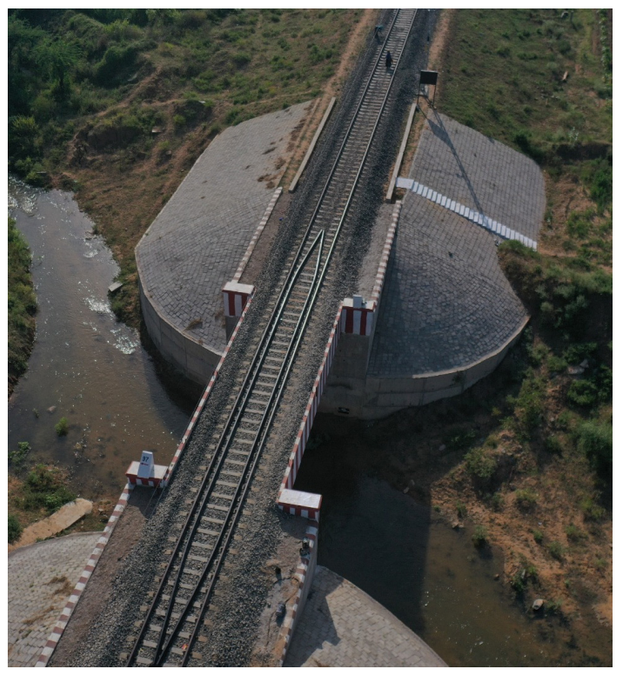

पश्चिम रेलवे की यह परियोजना यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा और क्षेत्रीय विकास के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है। संरक्षा निरीक्षण के पूर्ण होने के बाद जल्द ही इस मार्ग पर ट्रेनों का परिचालन प्रारंभ किया जाएगा, जिससे यात्रियों को आधुनिक, तेज़ और सुरक्षित रेल यात्रा का लाभ मिलेगा।

# वडोदरा मंडल द्वारा त्योहारी सीजन 2025 के लिए व्यापक भीड़ प्रबंधन व्यवस्था लागू

## यात्रियों की बढ़ती संख्या के मद्देनज़र सुरक्षित और व्यवस्थित त्योहारी यात्रा सुनिश्चित करने हेतु वड़ोदरा मंडल की सक्रिय तैयारी

आगामी त्योहारों के दौरान होने वाली भीड़ और यात्रियों की आवाजाही में अपेक्षित वृद्धि को देखते हुए पश्चिम रेलवे के वड़ोदरा मंडल द्वारा सुरक्षित, सुचारू और कुशल रेल संचालन सुनिश्चित करने के लिए व्यापक भीड़ प्रबंधन और यात्री सुविधा उपाय शुरू किए गए हैं। वडोदरा एवं प्रतापनगर स्टेशनों अंतर्गत विशेष व्यवस्था की गई है।

श्री अनुभव सक्सेना, जनसंपर्क अधिकारी, वडोदरा मंडल द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, वडोदरा स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा के लिए एक निर्दिष्ट यात्री होल्डिंग क्षेत्र बनाया गया है, जिसमें यात्रिओं के लिए बैठने की व्यवस्था, शुद्ध पेयजल सुविधा, पर्याप्त रोशनी, पंखे और सार्वजनिक घोषणा प्रणाली जैसी आवश्यक यात्री सुविधाएं प्रदान की गयी है।

वडोदरा और प्रतापनगर स्टेशनों पर यात्री प्रवेश और टिकट प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के लिए अतिरिक्त बुकिंग काउंटर चालू किए गए हैं। प्रत्येक स्टेशन पर कतार नियमन, यात्री सहायता और उनकी सुरक्षा के लिए अतिरिक्त टिकट जांच कर्मचारियों और आरपीएफ कर्मियों की तैनाती भी की गयी है।

श्री सक्सेना ने आगे बताया कि ट्रेन के प्रस्थान से पहले प्रतीक्षारत यात्रियों को आराम से बैठाने के लिए वडोदरा स्टेशन पर पर्याप्त कवर्ड होल्डिंग क्षमता बनाई गई है। समर्पित होल्डिंग एरिया के रूप में प्लेटफार्म संख्या 6 के निकट 300 वर्ग मीटर से अधिक के सुरक्षित स्थान की व्यवस्था की गई है।

रेलवे सुरक्षा बल (RPF) के जवान प्रभावी समन्वय बनाए रखने और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, ड्यूटी के दौरान निर्बाध डिजिटल संचार के लिए वॉकी-टॉकी और बॉडी वॉर्न कैमरा का उपयोग कर रहें हैं। RPF द्वारा सीसीटीवी के माध्यम से निगरानी तथा यात्रियों की आवाजाही पर चौबीसों घंटे निगरानी सुनिश्चित की जा रही है। इसके अतिरिक्त, वास्तविक समय पर समन्वय और किसी भी स्थिति पर त्वरित प्रतिक्रिया की सुविधा के लिए प्रभागीय नियंत्रण कार्यालय में एक समर्पित युद्ध कक्ष स्थापित किया गया है।

पश्चिमी रेलवे का वडोदरा डिवीजन यात्रियों से अपील करता है कि वे प्लेटफॉर्म या प्रवेश द्वार के पास भीड़ लगाने के बजाय निर्धारित होल्डिंग एरिया का उपयोग करें, ताकि व्यस्त समय के दौरान आवाजाही को सुचारू रूप से नियंत्रित किया जा सके। यात्रियों से यह भी आग्रह किया जाता है कि वे ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों और सुरक्षा कर्मियों के दिशानिर्देशों का पालन करें, क्योंकि ये व्यवस्थाएं सभी यात्रियों की सुरक्षा, आराम और सुविधा सुनिश्चित करने के लिए की गई हैं।

# मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की लायंस क्लब के अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों के साथ गांधीनगर में बैठक

## प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छता से सेमीकंडक्टर तक सभी क्षेत्रों को प्राथमिकता दी है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

### -: मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

**▸▸** प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सकारात्मक नेतृत्व के फलस्वरूप भारत की ग्लोबल इमेज में वृद्धि हुई है

**▸▸** प्रधानमंत्री की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा 'सबका साथ-सबका विकास' की राजनीति से विश्व के देशों में भारत के प्रति विश्वास दृढ़ हुआ है

गांधीनगर : लायंस क्लब इंटरनेशनल के प्रतिनिधियों ने बुधवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से भेंट की।

मुख्यमंत्री ने अपनी अध्यक्षता में आयोजित इस मुलाकात-बैठक में कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छता से लेकर सेमीकंडक्टर तक सभी क्षेत्रों के विकास को प्राथमिकता दी है। इसके फलस्वरूप देश विकास के नित-नए शिखर पार कर रहा है।

श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सकारात्मक नेतृत्व के परिणामस्वरूप भारत की ग्लोबल इमेज में वृद्धि हुई है। प्रधानमंत्री ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा 'सबका साथ-सबका विकास' की जो राजनीति दी है, उससे विश्व के देशों में भारत के प्रति विश्वास बढ़ा है।

मुख्यमंत्री ने लायंस क्लब की विश्वभर के देशों में सेवाभावी संस्था के रूप में उपस्थिति की प्रशंसा की और संस्था को उसके विकासोन्मुखी कार्यों में राज्य सरकार के उचित सहयोग का भी आश्वासन दिया।

उन्होंने प्रधानमंत्री द्वारा शुरू कराए गए अभियानों से आ रहे परिवर्तनों की भूमिका दी और लायंस क्लब द्वारा सरकार के अभियानों में सक्रिय भागीदारी की भी सराहना की।

इस अवसर पर लायंस क्लब के इंटरनेशनल प्रेसीडेंट श्री ए. पी. सिंह, अन्य पदाधिकारी तथा सदस्य उपस्थित रहे।

# भावनगर–ओखा एक्सप्रेस ट्रेन में वातानुकूलित कोच की सुविधा विस्तारित

यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए रेल प्रशासन द्वारा भावनगर–ओखा–भावनगर एक्सप्रेस ट्रेन (संख्या 19209/19210) में अस्थायी रूप से एक तृतीय वातानुकूलित (थर्ड एसी) कोच की सुविधा छह माह के लिए प्रदान की गई थी। यात्रियों की ओर से इस एसी कोच को उत्कृष्ट प्रतिसाद प्राप्त होने के कारण इसकी अवधि को और दो माह के लिए बढ़ाने का निर्णय लिया गया है।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार, यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए इस वातानुकूलित कोच को निम्नानुसार विस्तारित किया गया है –

1. ट्रेन संख्या 19209 भावनगर–ओखा एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त तृतीय एसी कोच, जिसे पूर्व में 02 दिसंबर 2025 तक लगाने हेतु स्वीकृति दी गई थी, अब उसकी अवधि बढ़ाकर 30 जनवरी 2026 तक कर दी गई है।

2. ट्रेन संख्या 19210 ओखा–भावनगर एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त तृतीय एसी कोच, जिसे पूर्व में 03 दिसंबर 2025 तक लगाने हेतु स्वीकृति दी गई थी, अब उसकी अवधि बढ़ाकर 31 जनवरी 2026 तक कर दी गई है।

इस सुविधा के विस्तार से यात्रियों को अधिक आरामदायक यात्रा का लाभ मिलेगा।

ट्रेन के ठहराव, संरचना एवं समय-सारिणी संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया भारतीय रेल की वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।